सुबह सवेरे

A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 29 मार्च, 2026

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 205, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

धरोहर

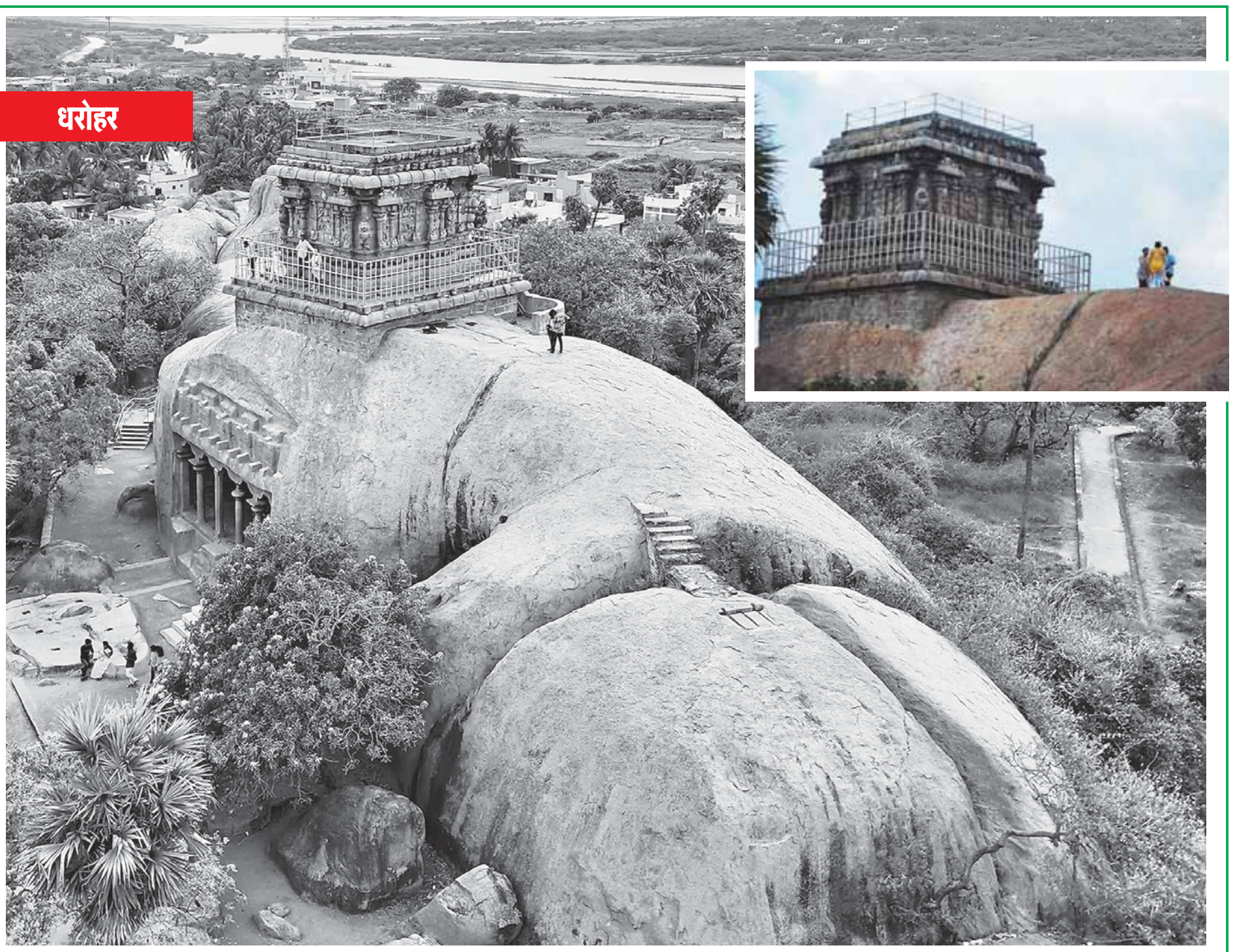

तमिलनाडु में एक पहाड़ी पर स्थित ऐतिहासिक ओलक्कन्नेश्वर मंदिर महाबलीपुरम में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल समूह के स्मारकों का हिस्सा है। 8 वीं शताब्दी की प्राचीन वास्तुकला का एक अद्भुत नमूना यह मंदिर 1200 वर्ष से भी अधिक समय पहले नाविकों को दिशा दिखाने वाले प्रकाशस्तंभ के रूप में कार्य करता था। **फोटो: गिरिश शर्मा**

सुप्रभात

छुओ,
पर इस बार
न देह को, न स्मृति को, न आवाज़ को
उस धुंध को छुओ
जो हमारी अनकही बातों में ठहरी है

बाहर खिड़की पर
अटका है एक सूरज
छुओ उसे, फिर देखना
कैसे तुम्हारे नाम से
मेरे भीतर बाहर
रोशनी
अचानक पेड़ों की तरह उग आती है

मेरी ओर मत देखो
मेरी उस परछाई को छुओ
जो तुम्हारे पीछे-पीछे चलती है
वहीं कहीं, हर कहीं
जहां मैंने अपना अदृश्य घर बना रखा है

समय को मत टटोलो अब
घड़ी की सुइयाँ थक चुकी हैं
अपने वृत्त में घूमती घूमती।
तुम उस विराम को छुओ
जो दो धड़कनों के बीच
बना रहता है
वहीं से
मैं तुम्हारी ओर बहती हूं

एक सूखी पहाड़ी नदी के तल में
अपने हाथ को उतारो
उसकी मिट्टी को छुओ
वहाँ अब भी
पानी की स्मृति गीली है
उसी में
मैंने तुम्हारे लिए
अपना स्पर्श छुपा रखा है
पत्थरों के नीचे
ताकि कोई मौसम उसे चुरा न सके

दूरी को छुओ
जैसे कोई पंछी
क्षितिज को अपने पंखों में भर लेता है
उसे पा लेने की तरह
बिना पहुँचे हुए भी

और सुनो
छुओ, अगर छू सको
उस खाली जगह को
जहाँ तुम
मुझसे भी ज़्यादा हो।

- अनुजीत इकबाल

चीन सीमा पर तीन गुना बढ़ी सेना की पेट्रोलिंग

- लद्दाख इलाके में आईटीबीपी के 29 नए आउटपोस्ट बने

पाकिस्तान-बांग्लादेश बॉर्डर पर एंटी ड्रोन-सेंसर से निगरानी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने ऑपरेशन सिंदूर और गलवान झड़प के बाद सीमाओं पर निगरानी बढ़ा दी है। पाकिस्तान और बांग्लादेश सीमा पर एंटी-ड्रोन, सेंसर और लेजर की मदद से निगरानी शुरू की गई है। वहीं, लद्दाख में चीन सीमा पर 29 नए आउटपोस्ट बनाए गए हैं। साथ ही भारत-तिब्बत सीमा पुलिस की पेट्रोलिंग 3 गुना बढ़ा दी गई है। गृह मंत्रालय की ऐन्यूअल रिपोर्ट 2024-25 के मुताबिक, भारत-पाकिस्तान सीमा पर जम्मू क्षेत्र और भारत-बांग्लादेश सीमा पर असम के धुबरी में 5-5 किमी इलाके में 'कंप्रीहेंसिव इंटीग्रेटेड बॉर्डर मैनेजमेंट सिस्टम' के दो पायलट प्रोजेक्ट शुरू किए गए हैं। यह कई तकनीकों और संसाधनों का एक नेटवर्क है। वहीं, म्यांमार सीमा पर अरुणाचल प्रदेश और मणिपुर में नया सिस्टम लगा है।

- **पहली बार एंटी-ड्रोन सिस्टम पर फोकस-** सीमाओं पर ड्रोन के बढ़ते खतरे को देखते हुए सुरक्षा बलों को स्पेशल ट्रैनिंग और मॉडर्न उपकरणों से लैस किया जा रहा है। यह सिस्टम अवैध हवाई घुसपैठ का पता लगाने और उसे खत्म करने में प्रभावी है। जीपीएस लेयर और पीएम गति शक्ति पोर्टल का इस्तेमाल सीमावर्ती बुनियादी ढांचे की सटीक मैपिंग और रणनीतिक योजना बनाने के लिए किया जा रहा है। यह संवेदनशील इलाकों की निगरानी सुनिश्चित करता है। आईटीबीपी ने 2022 से 2024 के बीच 29 नए बॉर्डर आउटपोस्ट बनाए हैं। इससे कुल संख्या 209 हो गई है। यह बढ़ोतरी जून 2020 में पूर्वी लद्दाख की गलवान घाटी में हुई झड़प के बाद की गई है।

रूस ने 4 महीने के लिए पेट्रोल निर्यात रोका

- 1 अप्रैल से लागू, भारत पर कम

मॉस्को (एजेंसी)। रूस ने 1 अप्रैल से 31 जुलाई तक पेट्रोल निर्यात पर रोक का फैसला किया है। उप-प्रधानमंत्री अलेक्जेंडर नोवाक ने ऊर्जा मंत्रालय से इस प्रस्ताव को तैयार करने को कहा। रूस के मुताबिक यह कदम घरेलू सप्लाई बनाए रखने और कीमतें नियंत्रित रखने के लिए है। नोवाक ने कहा कि मिडिल ईस्ट में चल रहे इजराइल-ईरान जंग की वजह से ग्लोबल तेल और पेट्रोलियम प्रोडक्शन बाजार में अस्थिरता बढ़ी है। इससे कीमतों में उतार-चढ़ाव हो रहा है। रूस रोजाना 1.2 से 1.7 लाख बैरल पेट्रोल निर्यात करता है। इस फैसले से चीन, तुर्किये, ब्राजील, अफ्रीका और सिंगापुर प्रभावित हो सकते हैं। ये देश रूसी तेल उत्पादों के बड़े खरीददार हैं।

इंडिगो फ्लाइट का इंजन फेल, दिल्ली में इमरजेंसी लैंडिंग

- वाइब्रेशन के बाद एक इंजन बंद हुआ, दूसरे से उतारा, 160 पैसेंजर सवार थे

नई दिल्ली (एजेंसी)। विशाखापट्टनम से आ रही इंडिगो फ्लाइट 6 ई 579 का इंजन फेल हो गया। जिसके बाद उसकी दिल्ली में इमरजेंसी लैंडिंग कराई गई। सभी 160 यात्री सुरक्षित हैं। विमान की सुरक्षित लैंडिंग सुनिश्चित करने के लिए एयरपोर्ट के रनवे 28 पर फुल इमरजेंसी लागू की गई थी।

सुरक्षा के तहत, रनवे के चारों ओर दमकल की गाड़ियां और एंबुलेंस मौजूद थीं। फायर डिपार्टमेंट के मुताबिक, शनिवार सुबह 10.53 बजे इमरजेंसी कॉल आया। टीम को अलर्ट पर रखा गया था। हालांकि विमान बोइंग 737 ने 10.59 पर सुरक्षित लैंडिंग की। इंडिगो एयरलाइंस के प्रवक्ता ने कहा, विशाखापत्तनम से दिल्ली आ रही इंडिगो की फ्लाइट (6ई 579) में लैंडिंग से पहले तकनीकी खराबी (टेक्निकल स्नैग) सामने आई। सुरक्षा के तौर पर पायलट ने तुरंत लैंडिंग की अनुमति मांगी। विमान एयरपोर्ट पर सुरक्षित लैंड हुआ। विमान की जांच की जा रही है। यात्रियों और क्रू की सुरक्षा हमारी सबसे बड़ी प्राथमिकता है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव आज इंदौर में लॉन्चपैड इन्क्यूबेशन एवं इनोवेशन सेंटर का करेंगे शुभारंभ

डीप-टेक नवाचार और स्टार्टअप को मिलेगा बढ़ावा

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव रविवार 29 मार्च को इंदौर में विभिन्न महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में शामिल होंगे। इस दौरान वे सिंहासा आईटी पार्क में स्थापित 'लॉन्चपैड : इन्क्यूबेशन एवं इनोवेशन सेंटर' का शुभारंभ करेंगे, दशहरा मैदान में आयोजित 'संकल्प से समाधान अभियान' कार्यक्रम में भाग लेंगे और अमृत 2.0 योजना में विभिन्न जल आपूर्ति परियोजनाओं का भूमि-पूजन करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव अत्याधुनिक सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट का लोकार्पण भी करेंगे।

प्रदेश में डीप-टेक नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र होगा सुदृढ़- सिंहासा आईटी पार्क में स्थापित 'लॉन्चपैड : इन्क्यूबेशन एवं इनोवेशन सेंटर' की स्थापना आईआईटीआई दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन (आईआईटी इंदौर का टेक्नोलॉजी ट्रांसलेशन एवं रिसर्च पार्क) तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के मध्यप्रदेश स्टेट इलेक्ट्रॉनिक्स डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (एमपीएसईडीसी) के संयुक्त सहयोग से की गई है। इस केंद्र का उद्देश्य डीप-टेक नवाचार को प्रोत्साहित करना, उच्च प्रभाव वाले स्टार्टअप्स को बढ़ावा देना, उन्नत विनिर्माण तथा उभरती प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में प्रदेश को सशक्त बनाना और उद्योग एवं अकादमिक जगत के बीच सहयोग को मजबूत करना है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव लॉन्चपैड सेंटर का अवलोकन करेंगे तथा यहां संचालित नवाचार एवं स्टार्टअप गतिविधियों की जानकारी भी प्राप्त करेंगे।

इंदौर में रूह कंपा देना वाला हादसा, पिता की आंखों के सामने, कार में जिंदा जल गया 4 साल का मासूम

इंदौर (नप्र)। मध्य प्रदेश के इंदौर में रूह कंपा देने वाली घटना सामने आई है। अपने 4 साल के मासूम बेटे को कार में घुमाने निकले पिता की आंखों के सामने मासूम जिंदा ही कार में जल गया। लपटों से घिरी कार के अंदर बच्चे की चीखें और बाहर पिता की चित्कार ने सबको हिला दिया।

इंदौर-खंडवा रोड पर शनिवार दोपहर हृदयविदारक घटना सामने आई, जिसने हर किसी को झकझोर कर रख दिया। सिमरोल थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले सेल सिटी के सामने एक स्विफ्ट कार में अचानक भीषण आग लग गई। इस हादसे में कार के अंदर बैठे 4 वर्षीय मासूम चिराग की जिंदा जलने से दर्दनाक मौत हो गई।पुलिस के अनुसार, मृतक बच्चा चिराग अपने पिता संजय बढ़िया के साथ घूमने निकला था। संजय पेशे से मैकेनिक हैं और घटना के वक्त सेल सिटी के पास डीजे वाली एक गाड़ी का काम कर रहे थे। चिराग पास ही खड़ी स्विफ्ट कार में बैठा हुआ था। अचानक कार से धुआं उठने लगा और देखते ही देखते पूरी गाड़ी आग की लपटों से घिर गई।

मदद के लिए दौड़े लोग, मिट्टी-पानी डाला प्रत्यक्षदर्शी संजू वर्मा ने बताया कि कार से धुआं उठते ही आसपास के लोग पानी और मिट्टी लेकर दौड़ पड़े। आग इतनी भीषण थी कि कोई भी कार के करीब जाने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। जब तक आग पर काबू पाया गया, तब तक मासूम चिराग दम तोड़ चुका था। सूचना मिलते ही सिमरोल पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीम मौके पर पहुंची और कार के शीशे तोड़कर बच्चे के शव को बाहर निकाला।

पिता का रो-रोकर बुरा हाल- हादसे के बाद से पिता संजय सुध-बुध खो बैठे हैं। मासूम बेटे को अपनी आंखों के सामने जलता देख उनका रो-रोकर बुरा हाल है। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए महू सिविल अस्पताल भेज दिया है। थाना प्रभारी सिमरोल ने बताया कि शुरुआती जांच में आग लगने का कारण शॉर्ट सर्किट प्रतीत हो रहा है। मामले की बारीकी से जांच की जा रही है और फॉरेंसिक टीम की भी मदद ली जा सकती है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25 °c | न्यूनतम 22°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 29 मार्च 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

किसने दिया आपको मस्जिद सील करने का अधिकार

● हाईकोर्ट ने यूपी सरकार से मांगा जवाब ● पूछा-सुनवाई का अवसर दिए बिना कैसे कर दिया सील

प्रयागराज (एजेंसी)। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने पूजा स्थल, मस्जिद के मामले पर एक बार फिर यूपी सरकार से जवाब मांगा है। हाईकोर्ट ने ने उत्तर प्रदेश सरकार से पूछा है कि क्या वह बिना किसी पूर्व सूचना या संपत्ति मालिकों को सुनवाई का अवसर दिए बिना किसी पूजा स्थल और मस्जिद को सील कर सकती है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने 18 मार्च सुनवाई के बाद आदेश जारी किया। हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति अतुल श्रीधरन और न्यायमूर्ति सिद्धार्थ नंदन की खंडपीठ ने राज्य सरकार से यह भी स्पष्ट करने को कहा कि वह किस कानूनी अधिकार के तहत किसी पूजा स्थल को सील कर सकती है। न्यायालय ने राज्य से पूछा, क्या बिना पूर्व सूचना जारी किए या याचिकाकर्ता को सुनवाई का अवसर दिए बिना निर्माणाधीन पूजा स्थल को सील करने का कोई कानूनी अधिकार है। साथ ही हाईकोर्ट ने यह भी पूछा है कि क्या पूजा स्थल परिसर के भीतर निर्माण आदि करने के मामले में मालिकों से किसी पूर्व अनुमति की आवश्यकता होती है। मामला मुजफ्फरनगर से जुड़ा है। जिले में एक मस्जिद को सील किए जाने के खिलाफ अहसान अली ने इलाहबाद हाईकोर्ट में याचिका दायर की है। इसी मामले की सुनवाई करते हुए हाईकोर्ट ने आदेश जारी किया। याचिकाकर्ता ने कोर्ट में कहा कि वह मुजफ्फरनगर के एक गांव में स्थित एक भूखंड के वैध स्वामी हैं। उन्होंने यह भूमि प्रवीण कुमार जैन से 2019 में विधिवत पंजीकृत विक्रय विलेख के माध्यम से खरीदी थी। हाल ही में अधिकारियों ने भूमि पर निर्मित मस्जिद को सील कर दिया, क्योंकि मालिकों ने उसके चारों ओर सीमा बनाना शुरू कर दिया था।

● अयोध्या में नारियल फटने के बाद धधक उठे पंडाल

दयाशंकर सिंह के महायज्ञ में लगी भीषण आग

अयोध्या (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के अयोध्या में शनिवार को एक बड़ा हादसा हो गया। यहां शनिवार को सरयू नदी के किनारे चल रहे महायज्ञ में अचानक आग लग गई। देखते ही देखते ही आग की लपटों ने पूरी यज्ञशाला को घेर लिया और मौके पर अफरा-तफरी मच गई। घटना की सूचना मिलने के बाद फायर ब्रिगेड मौके पर पहुंची और दमकल की 6 गाड़ियों ने आग पर काबू पा लिया। बताया जा रहा है कि यज्ञ में महा- आहुति के तौर पर चढ़ाए गए नारियल के फटने से यह हादसा हुआ। हालांकि, पुख्ता तौर पर अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। जानकारी के मुताबिक, अयोध्या में सरयू के किनारे माझा जमथरा में श्री लक्ष्मीनारायण महायज्ञ चल रहा है। रामनवमी के अवसर पर इस महायज्ञ का आयोजन यूपी सरकार में परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह की तरफ से कराया गया था। यह यज्ञशाला अयोध्या के श्रीराम जन्मभूमि मंदिर से महज 800 मीटर दूर है। शनिवार को महायज्ञ में गोसाईगंज के विधायक अभय सिंह भी मौजूद थे। बताया जा रहा है कि अचानक यज्ञशाला में चढ़ाया गया एक नारियल फटा और उसकी वजह से आग लग गई। आग की घटना बेहद भयावह थी और कुछ ही देर में पूरी यज्ञशाला धधक उठी। तुरंत मामले की सूचना फायर ब्रिगेड को दी गई।

भारत के वास्ते, एक बार फिर खुल गए होर्मुज के रास्ते

● दो और जहाज ने पार की सीमा, इंडियन नेवी ने संभाला मोर्चा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत आने के लिए दो और व्यापारिक जहाज ईरान के युद्धग्रस्त होर्मुज जलडमरूमध्य से होकर गुजर रहे हैं। भारत आ रहे इन जहाजों पर पेट्रोलियम पदार्थ लदा हुआ है। भारत आ रहे दोनों जहाजों को कवर देने के लिए भारतीय नेवी के युद्धपोतों को स्टैंडबाय मोड में तैनात रखा गया है। उम्मीद है इन जहाजों के होर्मुज से गुजरने के बाद कुछ और जहाजों को भी इसी तरह से निकलने का रास्ता मिल सकता है। न्यूज एजेंसी ने सूत्रों के हवाले से यह रिपोर्ट दी है। न्यूज एजेंसी ने सूत्रों के हवाले से खबर दी है कि भारत के लिए पेट्रोलियम उत्पाद ले जा रहे दो और व्यापारिक जहाज होर्मुज स्ट्रेट से गुजर रहे हैं। उन्हें सहायता प्रदान करने के लिए भारतीय नौसेना के युद्धपोत तैयार स्थिति में हैं।

सूत्रों के अनुसार, जल्द ही और जहाजों के भी उनके पीछे आने की उम्मीद है। शिप ट्रैकर वेबसाइटों के अनुसार भारतीय झंडे वाले पांच एलपीजी कैरियल भारत आ रहे हैं। ये जहाज दुबई-रास अल खैमाह के उत्तर में होर्मुज स्ट्रेट के ठीक दक्षिण-पश्चिम में लंगर डाले खड़े हैं। ये जहाज एक साथ जमा हो रहे हैं, ताकि वे होर्मुज से बाहर निकल सकें। इन जहाजों पर 1.7 लाख टन से ज्यादा एलपीजी है।

ईरान ने 26 जहाजों को गुजरने की दी मंजूरी

गार्ड्स ने सेपाह न्यूज वेबसाइट पर कहा, आज सुबह अमेरिका के भ्रष्ट राष्ट्रपति के इस झूठे दावे के बाद कि होर्मुज स्ट्रेट खुला है, अलग-अलग देशों के तीन कंटेनर जहाजों को... नौसेना की चेतावनी के बाद वापस भेज दिया गया। हाल ही में ईरान ने कुल 26 जहाजों को होर्मुज स्ट्रेट से गुजरने की मंजूरी दी है। ये जहाज देश के तट के पास स्थित लारक द्वीप के चारों ओर बने एक रास्ते का इस्तेमाल करते हैं। इनमें से ज्यादातर जहाजों का मालिकाना हक यूनान और चीन के पास था, जबकि कुछ जहाज भारत, पाकिस्तान और सीरिया के भी थे।

संक्षिप्त समाचार

तीन राज्यों के युवा विधायकों का सम्मेलन कल से भोपाल में

भोपाल। मध्य प्रदेश विधानसभा में युवा विधायकों का दो दिवसीय सम्मेलन 30 और 31 मार्च को विधानसभा के विधान परिषद हाल में आयोजित किया जा रहा है। इस सम्मेलन में राष्ट्रकुल संसदीय संघ (भारत क्षेत्र 6) के तीन राज्यों मध्य प्रदेश के 18, छत्तीसगढ़ के 15 तथा राजस्थान के 22 युवा विधायक सम्मिलित होंगे। 30 मार्च को आयोजित उद्घाटन कार्यक्रम में मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, मध्य प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष श्री नरेंद्र सिंह तोमर, राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष वासुदेव देवनानी एवं छत्तीसगढ़ विधानसभा के अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह उपस्थित रहेंगे। सम्मेलन के प्रथम दिवस 'लोकतंत्र और नागरिकों की भागीदारी को मजबूत करने हेतु युवा विधायकों की भूमिका' विषय पर मंथन होगा। प्रथम दिवस माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलगुरु श्री विजय मनोहर तिवारी भी युवा विधायकों को संबोधित करेंगे। सम्मेलन के दूसरे दिन 31 मार्च को 'विकसित भारत 2047? युवा विधायकों के दायित्व एवं चुनौतियां' विषय पर मंथन होगा। इस दिन अन्य सत्रों के अलावा एमआईटी पूना के चेयरमैन डॉ. राहुल वी. कराड का संबोधन होगा। समापन समारोह में राज्य सभा के उप सभापति श्री हरिवंश उपस्थित रहेंगे। इस कार्यक्रम में मध्य प्रदेश के संसदीय कार्य मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय एवं नेता प्रतिपक्ष श्री उमंग सिंघार विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे।

सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने चलाएगी अभियान लोसपा

भोपाल। लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी ने पार्टी के संस्थापक रघु ठाकुर व राष्ट्रीय अध्यक्ष एडवोकेट शमभूदयाल बघेल की उपस्थिति में भोपाल में आयोजित राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में प्रस्ताव पारित किया है कि दुनिया में चल रहे भीषण युद्ध और तबाही के समय में पार्टी देश देशवासियों और देश की सरकार के साथ खड़ी है। उर्जा संकट के हल की दिशा में लोसपा ने रेगिस्तानी व बीहड़ क्षेत्र में सौर ऊर्जा संयंत्र लगाने, सौर ऊर्जा का उपयोग करने वाले परिवारों को शत प्रतिशत अनुदान व एक एक इंडक्शन चूल्हा मुफ्त देने, गोबर गैस संयंत्र के उपयोग को प्रोत्साहित करने, कोयला क्षेत्र की गैस का उपयोग करने व एक परिवार - अधिकतम एक कार की नीति को प्रोत्साहित करने की मांग सरकार से करेगी। लोसपा आगामी महीनों में तीन राज्यों में पार्टी के राज्य कार्यकर्त्ता शिविर आयोजित करेगी। इस क्रम में छत्तीसगढ़ इकाई का राज्य शिविर आगामी 23-24 मई को चांपा में आयोजित किया जाएगा। खुले में विचरण करते गोवंश की समस्या को हल करने की दिशा में लोसपा की नीति रही है कि हर किसान को दो गायें पालने के लिए प्रत्येक किसान को हर महीने छह हजार रुपए या साल का 72 हजार रुपए सरकार दे, जिससे समस्या का समाधान हो सके तथा किसानों को भी मदद मिल सके. इस मुद्दे को लेकर लोसपा कार्यकर्ता गांव गांव में बैठक करेंगे। पार्टी की जिला इकाईया 18 अप्रेल शनिवार को विश्व शांति और विश्व संसद सम्मेलन आयोजित करेंगी. जिनमें अन्य स हमना दलों व सामाजिक संगठनों को भी आमंत्रित किया जायेगा राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में वर्तमान में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री मुकेश चंद्रा को कार्यकारी उपाध्यक्ष का दायित्व सौंपने के प्रस्ताव का भी सर्वसम्मति से समर्थन किया गया।

इजराइल की ईरान पर 50 फाइटर जेट से एयरस्ट्राइक

तेल अवीव/तेहरान (एजेंसी)। ईरान-इजराइल जंग के 28 दिन बाद अब हूती विद्रोही भी इसमें शामिल हो गए हैं। इजराइल ने ईरान के अंदर 50 फाइटर जेट्स से हमला किया। इजराइली सेना के मुताबिक शुक्रवार रात ईरान के तीन इलाकों में हथियार बनाने वाली फैक्ट्रियों और परमाणु कार्यक्रम से जुड़े ठिकानों को निशाना बनाया गया। सेना ने बताया कि ये हमले खुफिया जानकारी के आधार पर किए गए और कई घंटों तक चले। हमलों में अराक और यज्द जैसे अहम इलाके शामिल थे। जिन ठिकानों को निशाना बनाया गया, उनमें हथियार बनाने वाली सैन्य इंडस्ट्री और बैलिस्टिक के साथ एंटी-एयरक्राफ्ट मिसाइल के पुर्जे बनाने वाली फैक्ट्री शामिल थी।

मात्र 35 दिनों में वेस्ट यूपी को मिल गए 4 बड़े प्रोजेक्ट

● सीएम योगी और पीएम मोदी ने मारा 'विकास का चौका'

नोएडा (एजेंसी)। पश्चिमी उत्तर प्रदेश को इनदिनों लगातार तोहफे मिल रहे हैं। पिछले 35 दिनों के भीतर चार बड़ी विकास परियोजनाओं का लोकार्पण/शिलान्यास किया गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 28 मार्च को जेवर स्थित देश के सबसे बड़े नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट का शुभारंभ किया। 5 हजार एकड़ से ज्यादा एरिया में फैले इस एयरपोर्ट पर विमानों का संचालन जून से शुरू हो जाएगा। इससे पहले नोएडा में ही सेमी कंडक्टर फैक्ट्री का शिलान्यास हुआ था। इसी तरह दिल्ली से मेरठ के बीच चलने वाली नमो भारत ट्रेन और मेरठ मेट्रो की शुरुआत भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ही की है। जेवर में आयोजित विशाल जनसभा में पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि केंद्र और यूपी की भाजपा सरकार ने पिछले 35 दिनों के भीतर पश्चिमी उत्तर प्रदेश को चार बड़ी परियोजनाओं की सौगात दी है।

देश के सबसे बड़े नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट जेवर का शुभारंभ

● नोएडा में सेमी कंडक्टर फैक्ट्री का शिलान्यास- 21 फरवरी, 2026 को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उत्तर भारत की पहली सेमीकंडक्टर इकाई का शिलान्यास ग्रेटर नोएडा में किया था। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी वर्चुअल माध्यम से जुड़े रहे। यह परियोजना 4 हजार करोड़ रुपये की लागत से 48 एकड़ क्षेत्र में विकसित की जा रही है। फॉक्सकॉन और एचसीएल कंपनी की तरफ से इस प्रोजेक्ट पर करीब 3700 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। एक दिन बाद ही पीएम मोदी देश की पहली रैपिड ट्रांजिट सिस्टम के दिल्ली-मेरठ कॉरिडोर का शुभारंभ किया।

रूस से एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम खरीदेगा भारत

● 2.38 लाख करोड़ के रक्षा सौदे को भारत सरकार की मंजूरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत सरकार ने सेना को मजबूत करने के लिए 2.38 लाख करोड़ के अहम रक्षा सौदों को मंजूरी दी है। डिफेंस एक्विजिशन कार्उसिल ने शुक्रवार को रूस से पांच और स-400 लंबी दूरी की सरफेस-टू-एयर मिसाइल सिस्टम खरीदने के प्रस्ताव को भी मंजूरी दे दी। एस-400 ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान अपनी क्षमता दिखाई थी। सीईसी ने कई अन्य अहम खरीद प्रस्तावों को भी मंजूरी दी, जिनमें भारतीय वायु सेना के लिए मीडियम ट्रांसपोर्ट एयरक्राफ्ट और रिमोट से चलने वाले स्ट्राइक एयरक्राफ्ट की खरीद भी शामिल है। साथ ही सेना के लिए आर्मर्ड पियर्सिंग टैंक गोला-बारूद और धनुष गन सिस्टम भी खरीदा जाएगा। इन सभी प्रस्तावों की कुल कीमत लगभग 2.38 लाख करोड़ रुपये है। एस-400 के लिए मंजूरी पिछले साल मिली थी।

चुनाव में विक्टिम कार्ड खेलती हैं ममता बनर्जी

शाह बोले-कभी पैर तुड़वाती हैं तो कभी सिर पर पट्टी बंधवाती हैं

कोलकाता (एजेंसी)। गृहमंत्री अमित शाह ने शनिवार को कोलकाता में ममता सरकार के खिलाफ आरोप पत्र (चार्जशीट) जारी किया। शाह ने कहा, 'इसमें टीएमसी सरकार के 15 साल के काले कारनामों का जिक्र है, ये जनता की चार्जशीट है। बंगाल में अराजकता और बदहाली है। यहां की अर्थव्यवस्था चौपट हो चुकी है।' उन्होंने कहा, 'ममता दीदी ने हमेशा विक्टिम कार्ड की राजनीति की है। कभी पैर तुड़वा लेती हैं, कभी सिर पर पट्टी बंधवा लेती हैं, कभी बीमार हो जाती हैं और कभी ईसी को गालियां देती हैं।

शाह की बड़ी बातें

● **घुसपैठ पर :** बंगाल का चुनाव बंगाल के साथ-साथ पूरे देश के लिए महत्वपूर्ण है। पूरे देश की सुरक्षा एक प्रकार से बंगाल के चुनाव के साथ जुड़ी है। असम में भाजपा सरकार बनने के बाद असम से घुसपैठ लगभग समाप्त हो गई है। अब एक ही रास्ता बचा है, जहां से पूरे देश में घुसपैठिए फैलते हैं और देश की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ करते हैं।

● **सिंडिकेट पर :** टीएमसी के कुशासन में बंगाल भ्रष्टाचार की प्रयोगशाला बन चुका है। ऊपर से नीचे तक आपराधिक सिंडिकेट जनता को परेशान कर रहे हैं। विकास के अभाव में बंगाल उद्योग के लिए एक प्रकार से कब्रगाह बन चुका है।

जगदीप के बहाने रियल "सूरमा भोपाली" की बात

जन्मदिन विशेष

शकील खान

(फिल्म और कला समीक्षक)

सबसे पहले हम यहां यह बता दें कि यह आलेख हम जगदीप के बारे में नहीं लिख रहे हैं। स्व. जगदीप के जन्मदिन के बहाने हम उस आदमी को याद करने का उपक्रम कर रहे हैं, जिसके आधार पर 'शोले' का स्क्रीनप्ले लिखने वाली लेखक जोड़ी सलीम-जावेद के जावेद अख्तर ने 'सूरमा भोपाली' का कालजयी चरित्र गढ़ा। इस व्यक्ति का नाम था - नाहर सिंह बघेल। 'शोले' की रिलीज के बाद नाहर सिंह बघेल उर्फ सूरमा भोपाली ने जावेद अख्तर के खिलाफ केस भी किया था। जो उन्होंने बाद में वापस ले लिया था।

ये भी जानना जरूरी है कि फिल्म कलाकार जगदीप का मध्य प्रदेश से गहरा नाता है। उनका जन्म 29 मार्च 1939 को दतिया में हुआ था। उनका असली नाम सैयद इश्तियाक अहमद जाफरी था। उन्होंने 1951 में बीआर चोपड़ा की फिल्म 'अफसाना' से बतौर चाइल्ड आर्टिस्ट अपने फिल्मी सफर की शुरूआत की थी। रमेश सिप्पी की ब्लॉक बस्टर मूवी 'शोले' के कालजयी किरदार ने उन्हें घर-घर में इतना पापुलर किया कि लोग उन्हें उनके फिल्मी नाम जगदीप के बजाए सूरमा भोपाली के नाम से ज्यादा जानने-पहचानने लगे। लोगों को छोड़िए खुद जगदीप को अपने इस केरेक्टर से इतना लगाव था कि उन्होंने खुद 1988 में 'सूरमा भोपाली' नाम से बनी एक फिल्म का निर्देशन किया। दतिया और भोपाल से नाता होने के अलावा उनका मध्य प्रदेश से एक और नाता था, उनकी तीसरी बीवी इटारसी की रहने वाली हैं। 'बूगी-वूगी' से प्रसिद्धि पाने वाले जावेद जाफरी और नावेद जाफरी उनके बेटे हैं।

अब रियल सूरमा भोपाली पर आते हैं। लोग नाहर सिंह को नाहर मामा के नाम से बुलाते थे, उन्हें काले मामा कहकर भी बुलाया जाता था। बाद में उन्हें सूरमा भोपाली के नाम से भी पहचाना गया। ये कोई साठ के दशक की बात रही होगी, वे उन दिनों भोपाल म्युनिसिपाल्टी में नाकेदार के पद पर पदस्थ थे। भोपाल के पॉश रिहायशी इलाके प्रोफेसर कॉलोनी में उनका बंगला था, जहां वर्तमान में उनकी भतीजी प्रोफेसर मंजू सिंह और परिवार के दूसरे सदस्य रहते हैं। मंजू सिंह राजीव गांधी प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय में केमेस्ट्री की प्रोफेसर हैं।

नाहर सिंह बघेल को सूरमा भोपाली का खिताब कैसे मिला, इसके पीछे दिलचस्प किस्सा है। उनके एक दोस्त ने एक बार बताया था कि नाहर मामा थे तो ठिगने, कुल जमा पांच फीट के, लेकिन गुस्सा हमेशा उनकी नाक पर रखा रहता था। गलत बात उनसे सहन नहीं होती थी, इस कारण वो किसी से भी उलझ जाते थे। इस चक्कर में उनके दोस्तों को विरोधियों से लड़ना-भिड़ना पड़ता था। इसके चलते उनके दोस्त कई बार झल्ला जाते और झल्ला कर कहते - 'बड़े सूरमा बने फिरते हो।' इस तरह उनके दोस्तों के कारण उन्हें सूरमा भोपाली नाम मिला।

सूरमा भोपाली लेखक जावेद अख्तर के भी मित्र थे। सूरमा भोपाली के केरेक्टर के रचयिता जावेद अख्तर (सलीम-जावेद) ने पहली बार यह स्वीकारोक्ति 2017 में भोपाल में एक मंच से ये कहकर दी थी कि मैंने ये चरित्र एक जीवित व्यक्ति से इंस्पायर होकर गढ़ा था। केरेक्टर जावेद ने भले ही कहीं से लिया हो, उनकी कलम ने कमाल का चरित्र गढ़ा था। अगर सूरमा भोपाली का केरेक्टर आज दुनिया भर में अमर है तो इसके पीछे जावेद अख्तर और सलीम की लेखनी का ही सबसे बड़ा योगदान है। इस बारे में नाहर सिंह की भतीजी प्रो. मंजू सिंह कहती हैं- ''हमारे ताऊ को जब शोले से जोड़ा जाता है तो हमें बहुत गर्व होता है।''

नाहरसिंह के दोस्तों की टोली में पूर्व सांसद गुफराने आज़म, मतीन साहब, शाहिद कमाल पाशा, सरवर अली खान उर्फ भूरे मियां और मोहम्मद अली एडवोकेट शामिल थे। शाहिद कमाल पाशा अभिनेता रजा मुराद के सगे मामा थे, इसलिए रजा मुराद नाहर सिंह को 'नाहर मामा' कहकर बुलाते थे। रजा मुराद कई बार उनके प्रोफेसर कॉलोनी वाले घर में रूका करते थे और दूसरी तरफ नाहर मामा जब भी मुंबई जाते तो रजा मुराद के घर ही रूकते थे।

नाहर मामा से जुड़ा एक और किस्सा उनकी भतीजी मंजू सिंह ने नसीर कमाल के माध्यम से शेयर किया है। एक बार सेफिया कॉलेज भोपाल की हॉकी टीम ग्वालियर में सिंधिया गोल्ड कप हॉकी टूर्नामेंट में ग्वालियर की टीम से खेल रही थी। इस टीम में ओलंपियन इनाम उर रहमान भी भोपाल का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। मैच लोकल टीम के अगेंस्ट जा रहा था ऐसे में वहां के लोगों ने भोपाल टीम के खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी। तब नाहर सिंह तैश में आकर वहां के लोगों पर बरस पड़े ' तुम लोग भोपाली टीम के मेरे भाइयों के बारे में उल्टा सीधा नहीं बोल सकते। टीम कोन्करेज करते हुए वे चिल्लाए- 'कम ऑन, कम ऑन, आई कैन टेक यू ऑन, आई एम सूरमा भोपाली।' इस घटना के बाद तो नाहर मामा हीरो बन गए और सूरमा भोपाली का खिताब उनके नाम के साथ और ज्यादा ताकत के साथ जुड़ गया, हमेशा-हमेशा के लिए।

प्रो. मंजू सिंह यह भी बताती हैं कि ताउ (यानि नाहर सिंह) ने मेरे पापा के कहने पर ही जावेद अख्तर के खिलाफ किया केस वापस लिया था। नाहर सिंह तीन भाई थे। उनका जन्म 29 मार्च, 1935 को और मृत्यु 19 नवंबर 1979 को हुई थी।

भोजशाला पहुंचे हाईकोर्ट जज, 53 मिनट तक किया निरीक्षण

2 अप्रैल की सुनवाई से पहले अहम दौरा, एएसआई सर्वे रिपोर्ट पर सभी पक्षों की नजरें टिकी

धार (नप्र)। धार की ऐतिहासिक भोजशाला में शनिवार को मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय की इंदौर खंडपीठ के न्यायाधीश विजय कुमार शुक्ला पहुंचे, जहां उन्होंने परिसर का विस्तृत निरीक्षण किया। आगामी 2 अप्रैल को होने वाली अहम सुनवाई से पहले इस दौरे को बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

दोपहर 1 बजकर 52 मिनट पर न्यायाधीश सीधे भोजशाला परिसर पहुंचे। उनके साथ कलेक्टर प्रियंक मिश्रा और पुलिस अधीक्षक मयंक अवस्थी भी मौजूद रहे। सुरक्षा के कड़े इंतजामों के बीच न्यायाधीश ने करीब 53 मिनट तक परिसर में रहकर हर हिस्से का बारीकी से मुआयना किया।

एएसआई के किए कामों को भी देखा

निरीक्षण के दौरान उन्होंने भोजशाला के विभिन्न हिस्सों, स्तंभों, शिलालेखों और संरचना को ध्यानपूर्वक देखा तथा इसके इतिहास और वास्तुकला से जुड़ी जानकारी ली। प्रशासनिक अधिकारियों ने उन्हें भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) द्वारा किए गए कार्यों और वर्तमान व्यवस्थाओं से भी अवगत कराया।

2 अप्रैल को होना है अगली सुनवाई- गौरतलब है कि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा लगभग 98 दिनों तक किए गए सर्वे की रिपोर्ट उच्च न्यायालय में प्रस्तुत की जा चुकी है और इसकी प्रतियां सभी पक्षकारों को उपलब्ध कराई जा चुकी हैं। 16 मार्च को इंदौर हाईकोर्ट में हुई सुनवाई के दौरान पक्षकारों से दावे और आपत्तियां मांगी गई थीं, उसी दौरान न्यायाधीश ने स्थल का निरीक्षण करने की बात कही थी। भोजशाला को लेकर चल रहे कानूनी विवाद और वैज्ञानिक सर्वेक्षण की मांगों के बीच अब इस दौरे के बाद सभी की निगाहें 2 अप्रैल को होने वाली अगली सुनवाई पर टिकी हुई हैं, जहां मामले में महत्वपूर्ण दिशा मिल सकती है।

अब पेड़ काटने की अनुमति वन विभाग देगा

नगरीय क्षेत्रों में वन विभाग के फॉरेस्ट रेंजर होंगे ट्री-ऑफिसर

भोपाल (नप्र)। मप्र के सभी 413 नगरीय निकायों में अब निजी या सरकारी जमीन पर पेड़ों के कटाई की परमिशन जिला प्रशासन या नगर निगम के अधिकारी नहीं दे सकेंगे। राज्य सरकार ने नगरीय निकाय और जिला प्रशासन के अधिकारियों से यह अधिकार छीनकर वन विभाग के अधिकारियों को सौंप दिए हैं।

प्रदेश में अब कहीं भी पेड़ काटने या पेड़ों की छंटाई की परमिशन वन विभाग के वन परिक्षेत्र अधिकारी (फॉरेस्ट रेंजर) से लेनी होगी। यदि वह परमिशन नहीं देता है तो उसकी अपील उप वनमंडल अधिकारी (एसडीओ फॉरेस्ट) के पास करनी होगी। राज्य सरकार ने मप्र वृक्षों का परिरक्षण (नगरीय क्षेत्र) अधिनियम, 2001 की धारा-4 और धारा-9 की शक्तियों का उपयोग करते फॉरेस्ट रेंजर को ट्री-ऑफिसर और उप वन मंडल अधिकारी (एसडीओ) को अपीलीय अधिकारी के रूप में अधिसूचित कर दिया है। इस संबंध में नगरीय विकास एवं आवास विभाग ने गजट नोटिफिकेशन भी जारी कर दिया है।

कोर्ट ने दो माह पहले दिया था आदेश

मप्र हाई कोर्ट की इंदौर खंडपीठ ने फरवरी माह में एक जनहित याचिका पर राज्य सरकार को आदेश दिए थे कि जिला कलेक्टरों को ट्री-ऑफिसर की नियुक्ति का कोई अधिकार नहीं हैं। यह अधिकार सिर्फ राज्य सरकार को है। इसी याचिका में हाई कोर्ट ने प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा मनमाने ढंग से इंदौर शहर के एमओजी लाइंस प्रोजेक्ट में हरे-भरे पेड़ों को काटने की अनुमति को रद्द किया गया था। कोर्ट ने राज्य सरकार को आदेश दिया था कि वह वन सेवा के अधिकारियों को ही ट्री ऑफिसर के रूप में नियुक्त करे।

सूखे कचरे से बनेगा कोयला, ट्रायल शुरू

400 टन कचरे का निपटारा कर सकेगा प्लांट, पीपीपी मोड में 220 करोड़ से बना

भोपाल (नप्र)। भोपाल के आदमपुर छावनी में सूखे कचरे से कोयला बनेगा। यहां पर पीपीपी मोड में 220 करोड़ रुपए से टोरिफाइड चारकोल प्लांट स्थापित किया गया है। इसके जरिए 400 टन सूखे कचरे का निपटारा हो सकेगा। इसका ट्रायल भी शुरू कर दिया गया है।

स्वच्छ भारत मिशन के तहत नगर निगम सस्टेनेबल वेस्ट मैनेजमेंट मॉडल पर खरा उतरने जा रहा है। शहर से निकलने वाले सूखे कचरे के पूरे निपटारे के टारगेट को पूरा करने के लिए आदमपुर खंती में नेशनल थर्मल पावर कार्पोरेशन (एनटीपीसी) के माध्यम से टोरिफाइड चारकोल प्लांट लगा है। इसका ट्रायल रन प्रारंभ कर दिया गया है। इस प्लांट के माध्यम से प्रतिदिन 400 टन सूखे कचरे से टोरिफाइड चारकोल का निर्माण किया जाएगा। यहां निर्मित टोरिफाइड चारकोल को एनटीपीसी स्वयं के उपयोग में लेगी। कल निगम कमिश्नर संस्कृति जैन ने इसका निरीक्षण भी किया।

निगम ने 800 टन कचरा दिया- निगम कमिश्नर संस्कृति जैन ने बताया कि 12 अक्टूबर 2021 को आदमपुर में सूखे कचरे से टोरिफाइड चारकोल प्लांट के निर्माण एवं संचालन के लिए एग्रीमेंट किया गया था। इस प्लांट में रोजाना 400 टन सूखे कचरे से टोरिफाइड चारकोल का निर्माण किया जाएगा। प्लांट के ट्रायल रन के लिए 3 दिवस में निगम द्वारा 800 टन सूखा कचरा टोरिफाइड चारकोल प्लांट को दिया गया है। पूरे ट्रायल रन में करीब 1800 टन सूखे कचरे को प्रोसेस किया जाएगा।

निगम को बचत होगी

पीपीपी मोड पर लगभग 220 करोड़ रुपए की लागत से आदमपुर छावनी में 15 एकड़ भूमि पर एनटीपीसी ने यह प्लांट स्थापित किया है। प्लांट के संचालन से निगम को सूखे कचरे के निष्पादन पर व्यय होने वाली राशि की बचत होगी और नया लेगसी तैयार नहीं हो पाएगा।

बनारस के बाद भोपाल में ही लगा है प्लांट

निगम कमिश्नर जैन को एनटीपीसी के अधिकारियों ने बताया कि बनारस के बाद भोपाल में देश का दूसरा ऐसा शहर है, जिसने टोरिफाइड चारकोल प्लांट स्थापित करने के लिए अनुबंध किया था। बनारस के प्लांट के संचालन के अनुभव एवं कार्य व्यवहार से सीख लेकर भोपाल के संयंत्र में अपग्रेड टेक्नालॉजी का उपयोग किया गया है। यह प्रोजेक्ट मध्यप्रदेश में अपने किस्म का पहला प्रोजेक्ट है। इस प्रोजेक्ट के माध्यम से नगर निगम हर रोज सूखे कचरे का निपटारा कर सकेगा।

मप्र के प्रमुख मंदिरों में लागू होगा उत्तर-प्रदेश मॉडल

काशी मॉडल सीखने जाएंगे एमपी के अफसर, एआई-ड्रोन से संभालेंगे महाकुंभ की भीड़

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश सरकार धार्मिक स्थलों पर बढ़ती भीड़ के बेहतर प्रबंधन और आधुनिक तकनीकों के उपयोग को लेकर अब उत्तर प्रदेश के मॉडल से सीख लेगी। इसी क्रम में मप्र के वरिष्ठ अधिकारी वाराणसी स्थित काशी विश्वनाथ मंदिर और काशी विश्वनाथ धाम में अपनाई गई अत्याधुनिक क्राउड मैनेजमेंट प्रणाली का अध्ययन करेंगे।

वहीं, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 31 मार्च को वाराणसी में आयोजित निवेश सम्मेलन में शामिल होंगे। इस दौरान वे काशी विश्वनाथ कॉरिडोर का दौरा कर भीड़ प्रबंधन, कॉरिडोर डिजाइन और संचालन व्यवस्था का जायजा लेंगे तथा संबंधित अधिकारियों से आवश्यक जानकारी प्राप्त करेंगे।

प्रदेश के अधिकारियों को ड्रोन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) आधारित कैमरों और जियोस्पेशियल तकनीकों के उपयोग की विस्तृत जानकारी दी जाएगी। इन नवाचारों का उपयोग वर्ष 2028 में प्रस्तावित उज्जैन महाकुंभ में करने की योजना है।

उत्तर प्रदेश सरकार के अधिकारी आधुनिक भीड़ प्रबंधन पर प्रेजेंटेशन भी देंगे, जिसका उपयोग आगे चलकर उज्जैन के महाकाल मंदिर सहित प्रदेश के अन्य प्रमुख धार्मिक परिसरों में किया जाएगा।

एमओयू के जरिए सहयोग बढ़ाने की तैयारी- मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश सरकार के बीच 'वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट' (ओडीओपी), पर्यटन और पारंपरिक कला की साझा ब्रांडिंग को लेकर एक समझौता (एमओयू) किया जाएगा।

निवेश सत्र में मप्र में निवेश की संभावनाओं, जीआई टैग और ओडीओपी के तहत किए जा रहे प्रयासों पर चर्चा होगी। उत्तर प्रदेश अपने सफल ओडीओपी उत्पादों जैसे बनारसी सिल्क, लखनऊ की चिकनकारी, आगरा-कानपुर के लेदर उद्योग और भदोही के हस्तनिर्मित कालीन के जरिए ब्रांड निर्माण की रणनीति प्रस्तुत करेगा। वहीं, मध्यप्रदेश चंदेरी और महेश्वर जैसे पारंपरिक वस्त्रों की

तकनीक आधारित भीड़ प्रबंधन पर विशेष जोर

महाकाल विस्तार के बाद उज्जैन में प्रतिदिन श्रद्धालुओं की संख्या 50 हजार से 1 लाख तक पहुंच गई है, जबकि काशी विश्वनाथ धाम में यह संख्या लगभग तीन गुना तक रहती है। काशी में ड्रोन, एआई आधारित कैमरे और जियोस्पेशियल तकनीक के माध्यम से भीड़ का कुशल प्रबंधन किया जा रहा है। अधिकारियों के बीच इस बात पर भी चर्चा होगी कि भारी भीड़ के आवागमन को कैसे सुव्यवस्थित किया जाता है, कॉरिडोर का डिज़ाइन किस तरह बनाया गया है और श्रद्धालुओं की सुविधा व सुरक्षा कैसे सुनिश्चित की जाती है। इसके अलावा प्रयाग महाकुंभ में अपनाई गई बेस्ट प्रैक्टिसेज जैसे श्रद्धालुओं को जोड़ने वाले मोबाइल एप, एआई आधारित निगरानी, और आधुनिक वेस्ट मैनेजमेंट पर भी विस्तार से विचार किया जाएगा।

प्रदेश में 29 मार्च से लगातार 3 दिन बारिश

भोपाल-उज्जैन समेत 40 जिलों में अलर्ट, आंधी भी चल सकती है

भोपाल (नप्र)। शुक्रवार शाम सतना के चित्रकूट में तेज आंधी के साथ बारिश हुई। यहां 21 लाख दीप जलाए जाने थे, लेकिन बारिश से अधिकांश दीपों में पानी भर गया। मध्य प्रदेश में 29 मार्च से आंधी-बारिश का एक मजबूत सिस्टम एक्टिव होने जा रहा है। इसका असर करीब 3 दिन तक रहेगा। इस दौरान भोपाल, उज्जैन, ग्वालियर,

जबलपुर समेत लगभग 40 जिलों में बारिश और तेज हवा चलने का अलर्ट है। हवा की रफ्तार 40 से 50 किलोमीटर प्रति घंटा तक पहुंच सकती है। हालांकि, 28 मार्च (शनिवार) को प्रदेश में गर्मी का असर ज्यादा था। नर्मदापुरम में तापमान 40 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच चुका है और लू जैसे हालात बने रहे।

पहले भी बदला था मौसम, अब नया सिस्टम आएगा

शुक्रवार को साइक्लोनिक सर्कुलेशन और ट्रफ की वजह से ग्वालियर, चंबल, रीवा, सागर और जबलपुर संभाग के कई जिलों में बादल छाए रहे और मौसम बदला हुआ नजर आया। मौसम विभाग के अनुसार, यह सिस्टम शनिवार तक कमजोर हो जाएगा, जिससे गर्मी बढ़ेगी। इसके बाद 29 मार्च से नया सिस्टम एक्टिव होगा, जिसका सबसे ज्यादा असर 30 और 31 मार्च को देखने को मिलेगा। सतना के चित्रकूट में शुक्रवार शाम तेज आंधी और बारिश हुई, जिससे रामनवमी का आयोजन प्रभावित हो गया। यहां 21 लाख दीप जलाने की तैयारी थी, लेकिन बारिश से ज्यादातर दीप बुझ गए और मंच को तिरपाल से ढकना पड़ा।

यह आवाज़ों को नई परवाज़ देने का दौर

टैगोर कला केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण केन्द्र का शुभारंभ

भोपाल। लोक व्यवहार में हमेशा ही संवाद की अहमियत और उसकी बुनियादी ज़रूरत रही है। एक आदर्श व्यक्तित्व की पहचान हमेशा आवाज़ की अदायगी और उसकी भाषायी संवेदना और शिष्टाचार से की जाती है। मल्टीमीडिया के इस दौर में आवाज़ के कौशल और उसकी रचनात्मक उपयोगिता की संभावनाएँ तेज़ी से बढ़ती जा रही हैं। सही प्रशिक्षण, मार्गदर्शन और अभ्यास से आवाज़ के हुनर को निखारा जा सकता है। यह आवाज़ों को नई परवाज़ देने का दौर है।

प्रसिद्ध उद्घोषक, वॉइस ओवर मेंटर तथा कला समीक्षक विनय उपाध्याय ने ये महत्वपूर्ण सूत्र युवा प्रशिक्षुओं को दिए। एम.पी. नगर स्थित सारनाथ कॉम्प्लेक्स में वॉइस ओवर तथा स्टोरी टेलिंग सेंटर के शुभारंभ अवसर पर प्रतिभागियों से संवाद करते हुए उपाध्याय ने कहा कि आवाज़ तो प्रकृति से मिला उपहार है लेकिन महत्वपूर्ण होता है उसका उचित प्रयोग। ध्वनि, शब्द, संवेदना और विचारों के उचित

संतुलन से कही गई बात का असर होता है। विनय उपाध्याय ने इस तारतम्य में कहा कि सुनने, पढ़ने और बोलने के अंदाज़ को लगातार निखारते रहने से याददाश्त भी पैनी होती है। सकारात्मक सोच और ज्ञान की जिज्ञासा आपके संवाद को रोचक, प्रभावी तथा सार्थक बनाते हैं। ग़ौरतलब है कि इस केन्द्र का संयोजन टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केन्द्र द्वारा किया जा रहा है। मध्यप्रदेश के इस पहले और अनूठे प्रकल्प का ट्रेनर सुपरिचित स्टोरी टेलर तथा वॉइस आर्टिस्ट विभोर उपाध्याय कर रहे है। वे मुंबई से मल्टीमीडिया के विशेषज्ञों से प्रशिक्षित है। रेडियो चैनल के अलावा तथा मशहूर सिने अभिनेता पंकज त्रिपाठी के प्रॉडक्शन हाऊस में डिज़िटल एप के स्टोरी टेलर रहे हैं। वे 'शब्द राग' पोर्टल के संस्थापक-प्रशिक्षक भी हैं।

आरएनटीयू के चांसलर संतोष चौबे और एजीयू की निदेशक डॉ. अदिति चतुर्वेदी के अनुसार ज्ञान, कला और कौशल विकास के नए आयामों में नई पीढ़ी को प्रशिक्षित करने की दिशा में इस केन्द्र का संचालन किया जा रहा है। टैगोर कला केन्द्र के निदेशक विनय उपाध्याय ने बताया कि प्रशिक्षित प्रतिभागियों को तीन माह का प्रशिक्षण पूरा हो जाने के बाद प्रमाण पत्र के साथ आरएनटीयू की गतिविधियों तथा मल्टीमीडिया के कार्यों में प्रस्तुति के अवसर प्रदान किये जाएंगे। इस केन्द्र में आवाज़ की दुनिया के अनुभवी तथा प्रसिद्ध कलाकारों और विशेषज्ञों को मार्गदर्शन के लिए आमंत्रित किया जाएगा।

केन्द्र के शुभारंभ अवसर पर आईसेक्ट सारनाथ सेंटर के वरिष्ठ सलाहकार डॉ. अजय चौबे, ब्रिगेडियर जनरल श्याम श्रीवास्तव, प्रबंधक पंकज अरजरिया तथा समन्वयक निकीता चतुर्वेदी विशेष रूप से उपस्थित थे।

महिला से इंस्टाग्राम फ्रेंड ने रेप किया

थाने पहुंचे परिजन, पुलिस से बोले गैंगरेप हुआ, पीड़िता बोली-आरोपी अकेला था

भोपाल (नप्र)। भोपाल के मंगलवारा इलाके महिला के साथ इंस्टा फ्रेंड ने रेप किया। आरोपी ने पीड़िता को मिलने के बहाने बुलाया और होटल ले गया। जहां उसने महिला को करीब तीन घंटे तक बंधक बनाए रखा। घटना शुक्रवार की रात करीब 11.30 बजे की है। तब पीड़िता अस्पताल में भर्ती एक रिश्तेदार की तबीयत देखकर लौट रही थी। महिला के पति और परिजनों ने पहले गैंग रेप के आरोप लगाए थे। पीड़िता के बयानों में गैंग रेप की पुष्टि नहीं हुई। जिसके बाद पुलिस ने एक आरोपी के खिलाफ केस दर्ज किया। जल्द उसकी गिरफ्तारी करने के दावे पुलिस कर रही है। 29 वर्षीय महिला थाना टीला जमालपुर इलाके में रहती है। उसके करीबी रिश्तेदार की तबीयत खराब है, जिसे भोपाल के मालीपुरा स्थित चिरायु अस्पताल में भर्ती कराया गया है। महिला शुक्रवार की रात करीब 11.30 बजे अस्पताल में भर्ती रिश्तेदार को देखकर घर के लिए लौट रही थी। रास्ते में उसके इंस्टाग्राम फ्रेंड हारिस खान का कॉल आया। हारिस ने महिला पर तत्काल मिलने के लिए दबाव बनाया नहीं मिलने

की हालत में उसे बदनाम करने की धमकी दी। तब पीड़िता ने आरोपी को बताया कि मनोहर डेयरी के पीछे से गुजर रही है।

पति की हत्या की धमकी देकर किया रेप- आरोपी ने वहीं रुकने का कहा और 2 मिनट बात करने के बाद लौट जाने की बात कही। तभी मनोहर डेयरी के पिछले हिस्से में हमीदिया रोड के पास आरोपी से मिली। जहां आरोपी ने पति की हत्या करने की धमकी दी। पीड़िता के ही वाहन पर उसे जबरन बैठा कर हमीदिया रोड के एक होटल ले गया। जहां उसने महिला के साथ रेप किया। करीब 2 घंटे तक होटल रूम में ही महिला को बंधक बनाए रखा। इस बीच परिजन लगातार महिला को कॉल करते रहे।

कहानी

रविकांत राऊत

अपने मन का घर

जुलाई की शाम थी। शहर की उस पुरानी गली में उमस ऐसे ठहरी थी, जैसे समय पसीना बहा रहा हो। नाली उफन रही थी, बिजली बार-बार आँख मार रही थी और सड़क पर पड़ा नगर निगम का कूड़ेदान अपनी हैसियत भूल चुका था।

कमरे के भीतर सिद्धार्थ छत की ओर देख रहा था। एक मकड़ी धैर्य से जाल बुन रही थी–बिना किसी नक़्शे, बिना किसी वास्तुकार के।

सामने अवंतिका खड़ी थी। हाथ में 'रॉयल ग्रीन्स रेसीडेंसी' का चमचमाता ब्रोशर और चेहरे पर वर्षों से जमा असंतोष लिये हुये।

बस, अब और नहीं, उसने ब्रोशर मेज़ पर पटक दिया।

यह गली, यह बदबू, यह पानी की किल्लतज हर दिन की यही मारामारी- अब मुझसे सहन नहीं होता, मुझे भी एक ढंग के मोहल्ले में अच्छा सा घर चाहिएज सिद्धार्थ ,बालकनी वाला, गार्डन वालाज जहाँ ढंग से साँस ली जा सके।

सिद्धार्थ ने चश्मा उतारा। उसकी निगाहों में शरलक होम्स-सी शांति थी–वही निगाह जो दिखने वाले से ज़्यादा, छिपे हुए को पढ़ती है।

अवंतिका, वह बोला, -तुम इसे घर की समस्या समझ रही हो ,-मैं इसे एक केस मानता हूँ।

मुझे तुम्हारा दर्शन नहीं, समाधान चाहिए, उसने झुंझलाकर कहा।

समाधान ही तो है, सिद्धार्थ मुस्कुराया।

पिछले हफ्ते हम मेहता जी के नए घर गए थे। तीन करोड़ का विला। तुम्हें क्या दिखा?

मार्बल, झूमर, मॉड्यूलर किचन उसकी आँखों में चमक लौट आई।

और मैंने, सिद्धार्थ ने कहा, उनकी आँखों में उनकी आय पर भारी पड़ती 15 साल की ईएमआई देखी। डाइनिंग टेबल पर पड़ी बीपी,शुगर और हार्ट की गोलियाँ देखीं। और उस महंगे किचन में खड़ी उनकी पत्नी देखी – जो एक सड़े से कप के टूटने पर नौकरानी पर गंवारों जैसी चिल्ला रही थी।

वह खिड़की के पास गया। बाहर शोर था–हॉर्न, नाले, बारिश से पहले की बेचैनी।

शरलक कहता है,- सिद्धार्थ ने धीमे से आगे कहा,

'जब असंभव को हटा दो, तो जो बचता है वही सच होता है।'

असंभव यह है कि ईंट-पत्थर आनंद दे सकते हैं।

सच यह है कि उन्होंने मकान बनाया, और खुद को खो दिया।

अवंतिका ने प्रतिवाद किया, तो क्या एक अच्छा घर होना या लक्ज़री होना ग़लत है?

नहीं, सिद्धार्थ ने उसका हाथ थाम लिया।

लेकिन लक्ज़री (ऐश्वर्य) और (ब्लिस) आनंद एक नहीं हैं। ऐश्वर्य होटल है–चमकदार, ठंडा। आनंद घर है–जहाँ आप थककर सुकून से जैसे चाहें पसर सकें।

बाहर बादल गरजे। बारिश की पहली बूंद गिरी। नाले की बदबू पर मिट्टी की सोंधी खुशबू भारी पड़ गई।

दलाई लामा कहते हैं, -सिद्धार्थ फिर आगे बोला,

'मनुष्य अपनी सामर्थ्य से आगे जा कर बाहरी दुनिया को सजाने में इतना व्यस्त हो जाता है कि उसके भीतर का घर उजड़ जाता है।'

सोचो,उसकी आवाज़ गहरी हो गई,÷ आज मर-मर कर , हम तीस साल सिर्फ़ एक घर के लिए लगा दें। और जब वहाँ पहुँचें– तो शरीर बीमार हो, मन थका हो, और साथ की गर्मी ग़ायब हो।

अगर हम सारा जीवन केवल दीवारें खड़ी करने में लगा दें,

तो भीतर का मन खंडहर रह जाएगा।

मैंने अपने विभाग में सैकड़ों 'खूबसूरत घरों' के मालिक देखे हैं,डान ब्राउन के उपन्यासों के पात्रों की तरह–ऊपर भव्य इमारतें, भीतर खाली तहख़ाने लिये हुये ।

वे लोग ऐश्वर्य में रहते हैं,

पर आनंद से बेख़बर।

अवंतिका चुप थी।

ब्रोशर उसके हाथ में अब भारी लग रहा था। उसने गहरी साँस ली।

शायद- शायद मैं घर नहीं,सुरक्षा चाह रही थी।

सिद्धार्थ ने धीरे से उसका हाथ थाम लिया- और सुरक्षा, वह बोला, -ईंटों से नहीं, साथ से बनती है।

समस्या घर नहीं है, सिद्धार्थ बोला, समस्या है तुलना ।

'तेरा ऐसा–तो मेरा वैसा।'

यह जीवन नहीं, एक अंतहीन प्रसारण वाला सोप-ऑपेरा , सास-बहु सीरीयल है।

और इसमें हम थकेले अभिनेता हैं– दर्शक है कम-अक्लों की जमात ।

तो क्या करें? उसने धीरे से पूछा।

एक महल बनाएँ, सिद्धार्थ ने कहा, लेकिन भीतर।

जिसकी नींव संतोष हो।

जिसकी दीवारें संवाद हों।

जिसकी खिड़कियाँ हँसी के लिए खुलती हों।

और जिसकी छत से प्रेम की झूमरें लटकती हो।

फिर, उसने मुस्कुरा कर पूछा, - अगर मैं तुम्हें आज पाँच करोड़ का घर दे दूँ, और बदले में यह शाम, यह चाय, यह बातचीत और अपना गर्माहट भरा साथ छीन लूँ– तो क्या तुम सौदा करोगी?

अवंतिका ने बाहर बारिश देखी। गली वही थी, हालात वही थे– पर भीतर कुछ खिसक चुका था।

उसने ब्रोशर मोड़कर रख दिया- तो आपके इस 'भीतर के महल' का निर्माण कब शुरू होगा, श्रीमान जी ?

वो तो कब का शुरू हो चुका है- सिद्धार्थ ने चाय का पानी चढ़ा दिया था ङ्क देखो अभी हम उसी की बालकनी में तो खड़े हैं और –बारिश देख रहे हैं।

चाय की प्याली से उठती भाप की खुशबू - सिद्धार्थ की बांह अवंतिका की कमर को घेरे में लिये हुये , दोनों के गाल एक दूसरे को छूते हुये . सिद्धार्थ ने कहा - देखो इस पल, यहाँ जो सुकून है –वह किसी पॉश पेंटहाउस में नहीं मिल सकता ।

अवंतिका के चेहरे पर समाधान था और सिद्धार्थ के चेहरे पर भी मुस्कान थी, लेकिन उसके भीतर एक और सिद्धार्थ बैठा था–

जो जानता था कि उसका यह दर्शन आधा सत्य है और आधा मजबूरी, सिद्धार्थ जो खुद भी चाहता है , उसकी पत्नी की ख्वाहिश पूरी हो .

फिर उसने सोचा चलो,कम से कम आज तो बच गए।।

अंदर ही अंदर उसने राहत की साँस ली– ठीक है मैं इसे बड़ा घर नहीं दे पाया, पर आज के लिए बड़ा विचार तो बेच ही दिया।

उसे संतोष था– एक और शाम निकल गई, बिना झगड़े के , एक और नयी ईएमआई की बला आते आते टल गई,

आज फिर एक बार उसने अपनी बेबसी से , अवंतिका को मायूस नहीं होने दिया आज एक बार फिर से उसने अपनी पत्नी को अपने दर्शन के बल पर थोड़ा-सा सही बहला तो दिया ही . चाय खत्म हो रही थी, बारिश गिर रही थी, और सिद्धार्थ मन ही मन मुस्कुरा रहा था– ÷छोड़ यारा , घर तो बाद में बन जाएगा, फिलहालज एक कहानी तो बन ही गई।

राजकुमार कुम्भज की कविताएं

अक़्लमंद तो था नहीं

अक़्लमंद तो था नहीं
जेब से भी था ख़ाली-ख़ाली ही
मगर गर्दन में ऐंठन थी थोड़ी
कि जो जाती न थी
रोना था,इसी बात का रोना था
कि ज़रा भी झुकता न था
जो झुक जाता,
थोड़ा-सा भी झुक जाता,तो पाता
फिर इतना-इतना कुछ पाता
उठाता स्वर्ण-मुद्रा,गिनना भूल जाता
कि ठीक से संभाल भी नहीं पाता
सिर्फ़ इतनी-सी थी ज़िद मेरी
कि नहीं हो शर्त कोई जीवन में जीने की
असहमति के लिए बची रहे जगह
जगह-जगह,हर जगह
अगर हो जाता शामिल मैं भी सहमतों में
तब न ऐंठन होती,न कविता होती,न मैं
चाहता हूँ, यही चाहता हूँ
कि बची रहे
ये ऐंठन बची रहे
कविता में कविता की ऐंठन बची रहे
कविता बची रहे,जीवन बचा रहे
मैं रहूँ न रहूँ, ज़रुरी तो नहीं
कवि बचा रहे।

2.जागेगा सच और सब में.

दुःख,प्रेम,सपने और कविता
कहने लगे कि एक दिन,किसी एक दिन
रहेंगे,सब रहेंगे साथ-साथ और यहीं
नदियों में प्रवाह और घुमाव बने रहेंगे सब
झरनों का गिरना और उछलना बना रहेगा
आँधियों से वृक्षों का टकराना बना रहेगा
मैं नहीं रहूँगा, तुम नहीं रहोगे,नहीं रहेंगे वे
बॉसवन रहेगा, बॉसुरी रहेगी,गूँज रहेगी
जो जगाती रहेगी आग,पकाती रहेगी अन्न
जागेगा सच और सब में.

3.ये पृथ्वी है घर सभी का.

चलती हुई ट्रेन में बेटिकट
मैं देखता हूँ अपने समय के दृश्य में
गँगा-तीरे शहनाई फूंक रहे हैं बिस्मिल्लाह
अमज़द अली खोज रहे हैं भैरवी के रँग
और पूछ रही हैं उमराव जान पूछ रही हैं
दरवाज़े खोलते हुए,खोजते हुए बचपन
ये क्या जगह है दोस्तों,कौन-सा मुक़ाम है
कि जगह-जगह,ग़र्दो-ग़ुबार ही गुबार है
बताते हैं,समझाते हैं भीमसेन जोशी
किशोरी अमोणकर को स्मृतियों में
ज़रा भी अपराध नहीं है सपने देखना
देखना सपने सबूत है आदमी होने का
सपने नहीं तो आदमी भी कहीं नहीं
सपनों का होना,आदमी होने का सपना है
किसी को भी घटाने से घटता है खुद ही
सच्चा-झूठा नहीं होता है देश कोई भी
करते हैं होड़ काल से और मरते हैं बेमौत
हथियारों की होड़ ही बनाती है पागल
और पागल आदमी देश नहीं,दुश्मन है
किसी भी देश में,किसी भी देश का
भूल जाता है आदमी कि आदमी है वह
नहीं किसी दूसरी दुनिया का दूसरा प्राणी
हाथ हैं दो ही उसके भी,जैसेकि अन्य
पाँव हैं दो ही उसके भी,जैसेकि अन्य
कान हैं दो ही उसके भी,जैसेकि अन्य
और है एक खोपड़ी भी सभी के जैसी ही
फिर क्यों घृणा,क्यों ईर्ष्या,युद्ध क्यों
फिर क्यों ध्वस्त बारहखड़ी फिर-फिर
फिर क्यों मटियामेट पानी के संकल्प
क्यों क़त्ल किये जाते हैं फिर उड़ते पक्षी
अपनी-अपनी हद के बेहद में हैं सभी
और अपनी-अपनी ध्वनियों के ताप में भी
अपनी-अपनी स्वतंत्रताओं सहित निर्मल
है नहीं जगह कम किसी की भी,कहीं भी
ज़रा-सा वक़्त,ज़रा-सी जगह है सभी की
ज़रा-ज़रा मिट्टी,ज़रा-ज़रा आग,है सभी में
ये पृथ्वी है घर सभी का।

लघुकथा

वास्तु दोष

सुरेश सौरभ

ज्योतिषी जी जेल चले गए। आरोप, महिलाओं को अनेक झांसें देकर रेप का। बरसों बीते। जेल से छूट कर ज्योतिषी घर आए। पत्नी से बोले ÷लग रहा सबके घर का वास्तुदोष देखा, पर अपने घर का न देख पाया। इसलिए फंस गया ,वर्ना मेरे साथ तमाम मेरे साथी उल्टी-सीधी तरह से लाखों करोड़ों कमा

रहे हैं, पर आज तक न पकड़े गए।

पत्नी ने सिर पर हाथ रख कहा सब तुम्हारी तरह पोंगा नहीं।

वयोवृद्ध ज्योतिषी बोले- कुछ कह ले पर कमाई में तू भी बराबर हकदार है।

हां कमाई में भी कुकर्म में भी।

समझा नहीं?

तुम दूसरे का मालपुआ खाओगे तुम्हारे घर में कोई दूसरा खाएगा।

ज्योतिषी महराज की जीभ तालू से चिपक गयी। दिमाग बिलकुल सुन्न हो गया।

दृष्टिकोण

उमा त्रिवेदी

स्वतंत्र लेखक

एआईः धुनिक रिश्तों की नई धड़कन

आज के डिजिटल युग में जहाँ 'कनेक्शन' बस एक क्लिक की दूरी पर है, वहीं रिश्तों की गहराई कहीं खोती जा रही है। ऐसे में इमोशनल इंटेलिजेंस यानी भावनात्मक समझ ही वह सूत्र है जो दो इंसानों को सही मायनों में जोड़कर रखता है। आधुनिक रिश्तों में प्यार होना काफी नहीं है, बल्कि उस प्यार को समझने और संभालने की समझ होना कहीं अधिक जरूरी है। तो ये भावनात्मक समझ क्या है ? जिसे समझना और समझाना बहुत जरूरी है तो हम सरल शब्दों में कहें तो अपनी भावनाओं को पहचानना, उन्हें नियंत्रित करना और साथ ही अपने साथी की अनकही भावनाओं को महसूस करने की क्षमता ही इमोशनल इंटेलिजेंस है। यह सिर्फ विवादों को सुलझाने के बारे में नहीं है, बल्कि एक-दूसरे के प्रति संवेदनशीलता दिखाने के बारे में है।आधुनिक रिश्तों में इसकी बहुत बड़ी भूमिका रही है।

सक्रिय सुनना एक उच्च इक्यू वाला व्यक्ति सिर्फ जवाब देने के लिए नहीं, बल्कि समझने के लिए सुनता है। जब आपका साथी अपनी दिनभर की थकान या परेशानी साझा करता है, तो उसे समाधान से ज्यादा आपके 'एम्पैथी' (सहानुभूति) की जरूरत होती है।प्रतिक्रिया नहीं, प्रत्युत्तर झगड़े हर रिश्ते में होते हैं। लेकिन इमोशनल इंटेलिजेंस हमें सिखाती है कि गुस्से में चिल्लाने के बजाय, हम अपनी

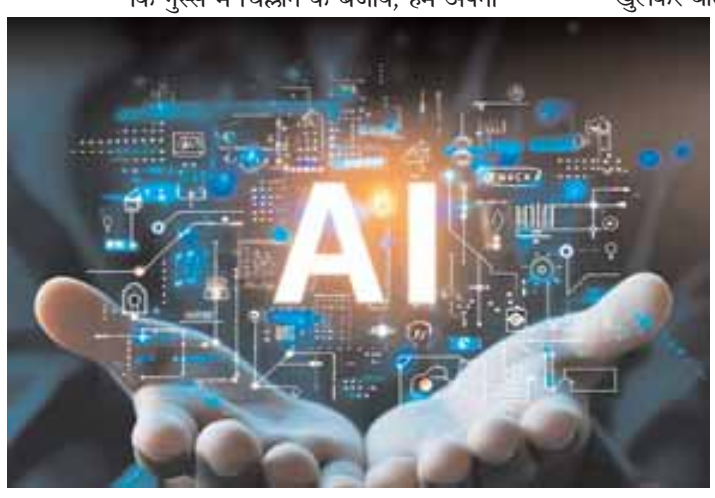

बात शांति से कैसे कहें। यह हमें ए + बी = सी के तर्क से परे जाकर यह सोचने पर मजबूर करती है कि स्थिति को बिगड़ने से कैसे रोका जाए।आज के दौर में 'पर्सनल स्पेस' बहुत महत्वपूर्ण है। एक भावनात्मक रूप से समझदार साथी जानता है कि कब हाथ थामना है और कब दूसरे को थोड़ा अकेला छोड़ देना है।

पुराने समय में रिश्तों में 'चुप रहना' ही समाधान माना जाता था, लेकिन आधुनिक रिश्तों में खुलकर बात करना अनिवार्य है जिसे हम संवाद की नई भाषा कह सकते हैं इमोशनल इंटेलिजेंस हमें अपनी असुरक्षाओं को बिना डरे साझा करने का साहस देती है। जब हम अपनी कमजोरियों को स्वीकार करते हैं, तो रिश्ते में विश्वास की नींव और मजबूत होती है।

रिश्ते दिमाग से नहीं, दिल की समझ से चलते हैं। जहाँ तर्क खत्म होता है, वहीं से गहराई शुरू होती है। अर्थात् अंततः, इमोशनल इंटेलिजेंस कोई जादुई शक्ति नहीं है, बल्कि एक कौशल (स्किल) है जिसे अभ्यास से सीखा जा सकता है। यह हमें सिखाती है कि हम अपने साथी के 'परफेक्ट' होने का इंतज़ार न करें, बल्कि खुद एक 'समझदार' साथी बनें। जिस रिश्ते में भावनाओं का सम्मान होता है, वह वक्त की हर आंधी को झेलने की ताकत रखता है।

पुस्तक समीक्षा

मोहन वर्मा

समीक्षक

एक पुराना मौसम लौटा, नवोदित कवि की सशक्त दस्तक

सीहोर के युवा कवि शहरयार का पहला कविता-संग्रह 'एक पुराना मौसम लौटा' उनकी रचनात्मक यात्रा का एक सशक्त आरंभ है। इस संग्रह में कुल 41 कविताएँ संकलित हैं, जो मुख्यतः प्रेम के विविध रंगों और अनुभवों को अभिव्यक्त करती हैं।

शहरयार, प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्थान शिवना प्रकाशन से जुड़े हुए हैं, जिसकी नींव प्रख्यात साहित्यकार पंकज सुबीर ने रखी है। अपनी पहली पुस्तक को उन्होंने अपने उस्ताद को समर्पित करते हुए विनम्रता से लिखा है कि वे उनकी तराशी हुई मिट्टी हैं, यह उनके गुरु-शिष्य संबंध की गहराई को दर्शाता है।

हालाँकि यह संग्रह अपेक्षाकृत देर से प्रकाशित हुआ, लेकिन इसे 'देर आयद, दुरुस्त आयद' कहना बिल्कुल उचित होगा। स्वयं कवि ने अपनी कविताओं के अलावा कोई भूमिका नहीं दी, परंतु उनके उस्ताद ने आशीर्वचन में स्पष्ट किया है कि कविताओं में कहीं-कहीं कच्चापन और अनगढ़पन जरूर है, फिर भी कवि में शिल्प और भाषा की अच्छी समझ दिखाई देती है। विषय-वस्तु मुख्यतः प्रेम के इर्द-गिर्द घूमती है, जो युवा अवस्था की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। अभी विषय प्रेम के आसपास ही बने हुए हैं जिससे कुछ कच्चापन और अनगढ़पन कविताओं में दिखाई देता है, मगर वह उतना चुभता नहीं है क्योंकि हम उस कवि की पहले पहल की कविताओं से रुबरु हो रहे हैं यह उसके पहले सफर का आगाज है। उस्ताद ने सब कुछ तो कह दिया...

कविताओं की बात करें तो पहली ही कविता अनजाने जंगल की खुशबू में प्रेयसी के नथ और जुल्फों के माध्यम से कवि की संवेदनाएँ अत्यंत कोमलता से व्यक्त हुई हैं। एक अन्य कविता में पहला चुम्बन प्रेम की अनुभूति को अतिवास्तविक बना देता है, जहाँ कवि स्वीकार करता है कि उसी क्षण उसने प्रेम को पहचान लिया। एक बेहद साधारण वस्तु 'पच्चीस रुपये का झुमका' कवि की नजर में अनमोल बन

जाता है, क्योंकि उसकी कीमत वस्तु में नहीं, बल्कि प्रेम के स्पर्श में निहित है। यही भाव कवि की संवेदनशीलता और प्रेम की गहराई को दर्शाता है।

शीर्षक कविता 'एक पुराना मौसम लौटा' में प्रेम, स्मृतियों और अधूरे रिश्तों की महीन परतें उभरकर सामने आती हैं। कभी हरी चूड़ियों के बहाने, कभी काजल, मुस्कान, या बालों की खुशबू के माध्यम से कवि प्रेम की सूक्ष्मताओं को जीवंत कर देता है। ये कविताएँ न केवल युवाओं को प्रेम के सागर में डुबकी लगाने को प्रेरित करती हैं, बल्कि उम्रदराज पाठकों को भी अपने अतीत की मधुर स्मृतियों में ले जाती हैं।

कहा जा सकता है कि यह संग्रह एक नवोदित कवि की संभावनाओं का परिचायक है। इसमें उगते हुए अंकुर हैं, जिन्हें अभी लंबी यात्रा तय करनी है, परंतु शुरुआत बेहद आशाजनक है। बहरहाल, प्रेम-रस में डूबी ये कविताएँ युवाओं को अपने समय के प्रेम-सागर में डुबकियाँ लगवाएँगी ही, साथ ही उम्रदराज पाठकों को भी उनके बीते दिनों की खुशगवार वादियों में ले जाकर उनकी डायरियों में दबे सूखे गुलाबों की महक को एक बार फिर ताज़ा कर देंगी।

शुभकामनाएँ, शहरयार; आपकी लेखनी यूँ ही महकती रहे।

पुस्तक- एक पुराना मौसम लौटा
लेखक- शहरयार
प्रकाशक- शिवना प्रकाशन

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला
पंकज तिवारी
कला समीक्षक

बच्चों की कलाकृतियों में भी होता है अनंत आकाश

जीवन की कल्पना भी जब से जेहन में आई होगी कला दर्पण की भांति पहले ही उपस्थित हो गई होगी। जीवन और कला एक दूसरे के बिना अधूरे माने जा सकते हैं। हां कला को हम कला के रूप में माने या न माने ये बात दीगर है। कल्पना, कल्पना और यथार्थ के बीच की जो कड़ी होती है या उसके बाद की प्रक्रिया जिसे संपूर्ण माना जा सके या नहीं पर कला वहां भी है। बात अभिव्यक्ति की हो और कला का जिक्र न हो संभव ही नहीं है?। आज जबकि शिक्षा में बच्चों से उम्मीद की जाती है कि वो रटे-रटाए उत्तरों से बचते हुए खुद को अभिव्यक्त करें। अपने अनुभवों और शब्दों के माध्यम से उत्तर तक पहुँचे। इस हेतु कला बहुत ही उपयोगी साबित हो रही है। कला में बच्चों को पूरी आजादी होती है, बंधनों से परे कल्पनाओं में उड़ने की आजादी, सोच को एक आजाद फलक तक पहुंचाने की आजादी, रंगों, रेखाओं विचारों के साथ उछल-कूद करने, डूबने-उतराने की आजादी। आजादी का आजाद दायरा यानि अनहद के आगे तक की भी यात्रा कला में ही संभव है। हम इससे इतर भी अगर कुछ सोचना चाहेंगे तो वह भी कला ही होगी या वहां भी कला ही होगी। हम चूंकि आज बच्चों के अभिव्यक्ति के इर्द-गिर्द घूमते हुए आगे बढ़ रहे हैं, उसी पर चर्चा कर रहे हैं इसलिए उसी दायरे के साथ आगे बढ़ने का प्रयास करेंगे।

एक ही विषय पर हर बच्चे अपनी अलग-अलग अभिव्यक्ति देते हैं और आश्चर्य कि किसी को भी झुठलाया नहीं जा सकता, सभी अपने कल्पना या मनः स्थिति के अनुसार उपस्थित हुए होते हैं और मौलिकता लिए होते हैं, मौलिकता इसलिए क्योंकि कला में नकल संभव ही नहीं है। बच्चे आजाद परिंदों की भांति जब कला के जरिए सफर पर होते हैं तो उस समय उनके आनंद का कोई भी पैरामीटर जवाब दे जाए खुशी कुछ ऐसी होती है। उनके बनाए कृतियों में एक नया उजास होता है, एक नई उर्जा होती है बस हमें उनके कृतियों को उनके नजर से समझने का प्रयास करना होता है। बात कोविड के समय की है लोग घरों में कैद थे। डर सभी में व्याप्त था, मन बेचैनियों के पराकाष्ठा को छू रहा था, भविष्य के उम्मीद पर भी संकट साफ जाहिर हो रहा था, आने वाले कल की उम्मीद पर भी संकट था। कुछ समय बाद ऑनलाइन कक्षाएं शुरू हुईं। बच्चों को कला के माध्यम से डर से बाहर निकालने के प्रयास में मैंने वीडियो बना कर कक्षा के ग्रुप में शेयर करना शुरू किया। चित्र बनाने की विधियाँ एवं कला से संबंधित वीडियो का असर ये हुआ कि बच्चे सब कुछ भूलकर इसी में रमें रहने लगे। निरंतर रंगों एवं रेखाओं से खेलते हुए अपनी एक अलग दुनिया बनाने में सफल हुए। एक ऐसी दुनिया जहाँ कल्पना में निरंतर गोते लगाने की पूरी आजादी होती है जहाँ कोविड का असर भी उनके मानसिक स्थिति को डावाँडोल करने में बेअसर रहा। कुछ बच्चे अपने अभिभावकों को भी इधर मोड़ पाने में सफल हुए। वैसे भी जब हम किसी मानसिक परेशानियों से जूझ रहे होते हैं तो कला, संगीत, साहित्य ही हमें वहाँ से बाहर ला पाती है।

कुछ बच्चे तो आज भी बहुत अच्छा कर रहे हैं। अपनी अभिव्यक्ति में समाज के समस्याओं, अच्छे-बुरे को बहुत ही अच्छे तरीके से संजो रहे हैं और अच्छी बात ये कि उस पर खुल कर चर्चा भी कर रहे हैं। वीडियो बनाते समय घर में मुझे मेरा बेटा रोज देखा करता था। वो उस समय पहली कक्षा में पढ़ता था। मेरे चित्रों के नकल करता रहता था। धीरे-धीरे अपनी अभिव्यक्ति खुद करने लगा। आड़ी-तिरछी किन्तु निडर स्ट्रोक युक्त रेखाएं, कुछ भी किसी भी परिवार के रंगों का निडरता से प्रयोग उसकी विशेषता बन गई। देखते ही देखते करीब दो सौ चित्रों का संग्रह हो गया उसके पास। कभी-कभी अचानक से किसी प्रतियोगिता में जाना होता है। बच्चों से उनके रुचि के अनुरूप पूछ लिया जाता है। कुछ बच्चे प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु तुरंत तैयार हो जाते हैं। उन्हें अचानक से विषय बताया जाता है। वैसे भी कला के प्रतियोगिता में विषय स्पॉट पर ही दिया जाता है। आश्चर्य कि बच्चे, छोटे बच्चे कितनी गूढ़ रहस्यों से भरी कृतियों का निर्माण कर जाते हैं। जहाँ तक हम और आप या आम जनमानस आसानी से पहुँच भी नहीं सकता बच्चे अपने कृतियों के माध्यम से पहुँच जाते हैं। प्रतियोगिता में पुरस्कृत होना न होना अलग बात है पर उनकी अभिव्यक्ति क्षमता पर अध्ययन किया जाय तो हर बच्चे के कृति में उसकी अपनी एक दुनिया होगी जहाँ वो खुल कर रंगों से खेला है, बतियाने का प्रयास किया है एक-एक रेखाओं से। फिल्म 'तारे जमीं पर' इसका एक बहुत ही बढ़िया उदाहरण है। भारतीय कला में चित्रकार राजा रवि वर्मा के योगदान से शायद ही कोई अपरिचित हो। रवि वर्मा मात्र 14 वर्ष के थे जब उनके चाचा एक चित्र अधूरा छोड़ कर कहीं चले गए थे। आश्चर्य कि जब वो वापस आए उनका चित्र पूरा हो चुका था। बालक रवि वर्मा द्वारा बचा हुआ चित्र पूरा कर दिया गया था और कहीं से अप्रशिक्षित कलाकार द्वारा बनाया भी नहीं लग रहा था। उनके चाचा इतने प्रभावित हुए कि बालक रवि वर्मा के सुनहरे भविष्य हेतु पूरी तन्मयता के साथ जुट गए। 14-15 वर्ष की अवस्था में पिकासो के उम्दा चित्र देखकर और उन चित्रों से प्रभावित होकर उनके पिता जो खुद कला अध्यापक थे, को लगा कि इन कृतियों के आगे तो मेरी कृतियाँ

कहीं भी नहीं ठहरती फलतः उन्होंने चित्र बनाना ही छोड़ दिया था। पेंटिंग संबंधित अपना सारा सामान उन्होंने पिकासो को दे दिया और कला के दुनिया में उड़ने हेतु आशीर्वाद भी। इस दुनिया में जितने भी लोग हैं किसी न किसी खूबियों से भरे हुए हैं। कोई न कोई विशेषता उनके पास है जो उन्हें औरों से अलग बनाती है। बच्चों के साथ भी यही बात सटीक बैठती है। बस आदरणीय अध्यापकों को उनके खूबियों को ढूंढ़ना है और उसी ओर बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना है। उन्हें शुरू से ही कुछ नया करने की आजादी देनी है। बच्चों के साथ जजमेंटल नहीं होना है। ऐसा करने पर निश्चित रूप से हम बच्चों से उम्मीद से ज्यादा प्राप्त कर पायेंगे। विषय कोई भी हो आजादी हर जगह चाहिए, खोज की गुंजाइश हर जगह है। हमें बच्चों को संवाद का पूरा मौका देना चाहिए। उनके बातों पर उनके साथ खुल कर विचार रखना चाहिए। छोटी-छोटी नाटिकाओं के माध्यम से गंभीर से गंभीर विषयों पर कार्यक्रम करवाने चाहिए। पर्यावरण, नशामुक्ति, संस्कृतियों का क्षरण, इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के फायदे और नुकसान जैसे विषयों पर खुले मंच पर वाद-संवाद करवाना चाहिए। बच्चों को उन्हीं के द्वारा सही ग़लत के निर्णय तक पहुंचने हेतु स्वतंत्र छोड़ देना चाहिए। हमें उन गतिविधियों में बिल्कुल उदासीन बनकर रहना चाहिए। वहाँ श्रोता और वक्ता दोनों बस छात्र ही रहें। कुछ वर्ष पहले विद्यालय के पत्रिका हेतु बच्चों से उनका लिखा कुछ आमंत्रित किया गया था। अधिकतर बच्चे किसी और की लिखी कविताएं ला रहे थे जबकि एक छात्रा माँ पर आलेख लिख कर लाई थी। उसके लेखनी से उसके अंदर बैठे घबराहट को मैं देख पा रहा था जो हर किसी, जो पहली बार लिखता है के साथ होता है। उसे मैंने प्रेरित किया कि वो यही रचना दुबारा और बिना डरे लिखे। उसने लिखा और इतना भावयुक्त लिखा कि पढ़ कर आश्चर्य हुए बिना नहीं रहा जा सकता था। रचना प्रकाशित भी है। कला पर बच्चों के वक्तव्य सुन कर मन गदगद हो उठता है उम्मीद और बढ़ जाती है। सभी अभिभावकों से भी अपेक्षा है कि वो अपने बच्चों को शिक्षा के क्षेत्र में उनके भाव, विचार और उनके मन मुताबिक विषय में आगे बढ़ने में उनकी मदद करें ताकि बच्चे खुल कर अपने विषय के साथ अपने विचारों को भी जोड़ सकें और जीवन में बहुत आगे निकल सकें। नई शिक्षा नीति में निश्चित रूप से शिक्षा को लेकर बहुत कुछ परिवर्तन हुआ है और इससे बच्चों के अध्ययन, कला के सृजन पर बहुत प्रभाव पड़ने वाला है साथ ही साथ कला के प्रति लोगों के रवैया पर भी बदलाव होने वाला है। संलग्न कलाकृति दिल्ली के केंद्रीय विद्यालय के छठी कक्षा के छात्र आर्नव तिवारी की है।

सामियक
तनुजा चौबे
लेखक साहित्यकार हैं।

आधुनिकता की दौड़ में अकेलापन

आधुनिकता की दौड़ में आज हर व्यक्ति भाग रहा है। दौड़ तो सब रहे हैं, पर हर इंसान भीतर से अकेला होता जा रहा है। पैसा कमाने की होड़ और आज की जीवनशैली में लोग रिश्तों और दोस्तों को दांव पर लगाते चले जाते हैं। दिखावे की सफलता पाने की चाह में वे यह भूल जाते हैं कि वे सफल तो हो गए हैं, पर उस सफलता की खुशी बाँटने वाला उनके साथ कोई नहीं है।

यह अकेलापन तब और गहरा हो जाता है, जब इंसान कुछ हासिल करने के बाद स्वयं को विशेष समझने लगता है और दूसरों से अलग कर लेता है। वह अपने चारों ओर एक अदृश्य दीवार खड़ी कर लेता है। पैसा, कंफर्ट और लग्ज़री उसकी जीवनशैली का हिस्सा बन जाते हैं–खानपान, कपड़े, महंगे डिजिटल संसाधन और सबसे महत्वपूर्ण, एक भव्य आशियाना।

यह आशियाना वह अपने और अपने परिजनों के सपनों के आधार पर बनाता है। लेकिन आजकल हर इंसान को 'प्राइवेसी' चाहिए। वह एक कोने में सिमटकर रहना चाहता है, इसलिए घरों की बनावट भी वैसी ही हो गई है–ऊँची-ऊँची बाउंड्री वॉल, घर के भीतर अलग-अलग कमरे और हर व्यक्ति अपने-अपने कमरे में सीमित। जैसे जीवन किसी तिजोरी में कैद हो गया हो।

कभी-कभी यह जीने का तरीका बहुत नुकसानदायक भी हो जाता है। यदि किसी को कोई बीमारी हो जाए या वह किसी दुर्घटना का शिकार हो जाए, तो वह अकेले कमरे में असहाय रह जाता है। आधुनिक सुविधाएँ–जैसे फेस लॉक और मॉड्यूलर किचन–जहाँ एक ओर सुविधा देती हैं, वहीं दूसरी ओर खतरे भी बढ़ाती हैं

फेस लॉक और नंबर वाले ताले लगाने का चलन बढ़ गया है। ये सुविधाएँ सुरक्षा तो देती हैं, पर कई बार आवश्यकता के समय समय पर खुल नहीं पातीं या उनका रखरखाव जटिल हो जाता है। ऐसी परिस्थितियों में ये साधन सुविधा के बजाय परेशानी का कारण बन जाते हैं और अनजाने में परिवार के बीच दूरी भी बढ़ा देते हैं। प्रगति करना या आधुनिक होना गलत नहीं है, लेकिन उसका स्वार्थवश या बिना सोच-समझ के उपयोग करना निश्चित रूप से हानिकारक हो सकता है।

इतना सुरक्षित घर होने के बावजूद, उसमें रहने वाले लोगों के बीच संवाद धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा है। सब कुछ होते हुए भी 'किसी का होना' अब मायने नहीं रखता।

आज त्योहारों का स्वरूप भी बदल गया है। महंगे तोहफे देना ही जैसे त्योहार मनाने का पर्याय बन गया है। व्यापारी अपने से बड़े लोगों को उपहार देते हैं और बड़े लोग उन्हें कर्मचारियों में बाँट देते हैं–बस, यहीं तक त्योहार सीमित हो गए हैं। घर के बुजुर्ग यदि कुछ समझाना चाहें भी, तो भागती-दौड़ती जिंदगी में बच्चों के पास उन्हें सुनने का समय नहीं होता। उनकी दृष्टि में त्योहार केवल तोहफों, क्लब और पार्टियों तक सीमित रह गए हैं। पूजा-पाठ और संस्कार धीरे-धीरे गौण होते जा रहे हैं।

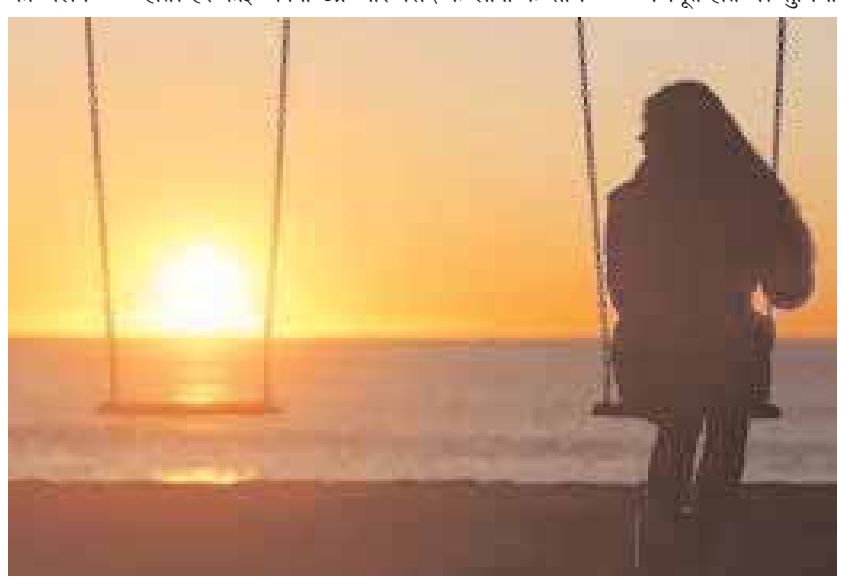

अब एक ही घर में रहते हुए भी लोग साथ नहीं होते। हर कोई अपनी उम्र और पसंद के लोगों के साथ

ही समय बिताना चाहता है–बुजुर्ग अलग, बच्चे अलग। इस तरह, जो त्योहार कभी परिवार को जोड़ते थे, वही अब अनजाने में दूरी बढ़ाने लगे हैं। यही बदलता स्वरूप इस बढ़ते अकेलेपन को और गहरा कर रहा है।

इसके विपरीत, पहले के जीवन में संयुक्त परिवार होते थे, जहाँ सुख-दुख आपस में साझा किए जाते थे। इससे अकेलापन बहुत कम महसूस होता था। दुख सहने की शक्ति बढ़ जाती थी और सुख या खुशी पूरे परिवार में बाँटकर दोगुनी हो जाती थी। इससे सकारात्मकता बनी रहती थी और आपसी संबंध भी मजबूत होते थे। सुविधाएँ भले ही कम होती थीं, लेकिन अपनापन बहुत अधिक होता था।

अपने दुख बाँटने के लिए बाहर जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी; परिवार ही उसका समाधान बन जाता था। आजकल लोग सहारा बाहर ढूंढते हैं, जिसके कारण कई बार गलत निर्णय भी ले लेते हैं, जिनका खामियाजा पूरे परिवार को भुगतना पड़ता है। वास्तव में, समस्याएँ इतनी बड़ी नहीं होतीं कि उनका समाधान न निकले–हर बात को आपस में बातचीत करके सुलझाया जा सकता है।

सच तो यह है कि घर बड़ा नहीं, रिश्ते बड़े होने चाहिए। मकान की सुरक्षा से ज्यादा, उसमें रहने वालों को सुरक्षा का एहसास होना चाहिए। सभी सकारात्मक भाव–प्यार, सुरक्षा, खुशी, कृतज्ञता और उत्साह–इन्हीं से जन्म लेते हैं। लेकिन इस तरह की जीवनशैली में नकारात्मकता जल्दी घर कर जाती है, जिससे 'घर' का एहसास कम और 'मकान' का स्वरूप अधिक दिखाई देने लगता है।

इस बढ़ते अकेलेपन का समाधान भी हमारे पास ही है। आपसी संवाद को बढ़ाना, एक-दूसरे के साथ समय बिताना और भावनाओं का आदान-प्रदान करना अत्यंत आवश्यक है। टेक्नोलॉजी का संतुलित उपयोग करें और रिश्तों को प्राथमिकता दें। हमेशा याद रखें कि संसाधन मकान बनाते हैं, लेकिन संवेदनाएँ उसे घर बनाती हैं।

एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव तभी बढ़ेगा, जब हम एक-दूसरे को समय देंगे और उनकी समस्याओं को समझने का प्रयास करेंगे। पैसों से अधिक रिश्तों को महत्व देना ही जीवन को संतुलित और सार्थक बनाता है।

विलासिता के पीछे अंधाधुंध भागना उचित नहीं है। घर को घर ही रहने दें। उसे अत्यधिक आधुनिक संसाधनों से इतना न भर दें कि उन्हें संचालित करते समय छोटी-सी लापरवाही भी बड़ी दुर्घटना का कारण बन जाए।

पहले मिट्टी के घर होते थे–बिना पेंट और ए.सी. के भी ठंडे रहते थे। चूल्हे पर बना भोजन, सरल जीवन और परंपरागत साधन–ये सब जीवन को सहज और सुरक्षित बनाते थे। दुर्घटनाओं की आशंका भी कम होती थी।

यह कहना नहीं है कि प्रगति न की जाए। प्रगति आवश्यक है, लेकिन उसके साथ विवेक और सावधानी भी उतनी ही जरूरी है। क्योंकि वही संसाधन, जो जीवन को आसान बनाते हैं, यदि समझदारी से उपयोग न किए जाएं, तो वही जीवन के लिए खतरा भी बन सकते हैं।

वेबसिरीज़ समीक्षा
आदित्य दुबे
लेखक वेबसाइट ई- अंतर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं ।

यंग शेर्लाक: विदेशी जासूस शेर्लाक होम्स का देशी संस्करण

विदेशी जासूसी पात्र शेर्लाक होम्स के चरित्र को केन्द्र में रखकर अब भारत में भी अमेज़न प्राइम के ओटीटी प्लेटफॉर्म पर फ्रयंग शेरलॉकफ्र नाम की एक वेबसिरीज़ को रिलीज किया गया है । इसमें शेरलॉक होम्स के जवानी के दिनों को दिखाया गया है । इसके आठ एपीसोड की लम्बाई पैतालीस से पचपन के मिनट के बीच की है जिसका निर्देशन गाय रिची द्वारा किया गया है । एक साधारण लड़के के असाधारण जासूस बनने का सफर है यह वेबसिरीज़ । अगर आपको जासूसी कहानियां देखना पसन्द हैं, तब यह शो आपको निश्चित रुप में पसन्द आयेगा । प्राइम वीडियो पर इसके आठ एपीसोड दिखाए गए हैं । ऐसा नहीं है कि हर एपीसोड में आपको मजा आए कहीं-कहीं पर यह थोड़ा बोर भी फील कराएगा पर हर बार अचानक से रोमांच से भरे हुए कई सीन आ जाते हैं तब हमारा शो के प्रति लगाव और भी बढ़ जाता है ।

जासूसी फिल्मों के प्रति दर्शकों का हमेशा रुझान रहा है । बॉलीवुड और हालीवुड दोनों के ही रचना संसार में कई प्रख्यात लेखकों की जासूसी कथाओं में कई जासूसी पात्र गढ़े गये। बॉलीवुड में कभी व्योमकेश बख्शी , फेलुदा या इन्स्पेक्टर प्रद्युम्न के रूप में तो कभी बालीवुड में शर्लाक होम्स या जेम्स बॉन्ड के रुप में जासूसों ने छोटे-बड़े परदे पर अपना वर्चस्व कायम किया ।

इस बार हम चर्चा करेंगे शर्लाक होम्स की ,जो दुनिया का सबसे प्रसिद्ध काल्पनिक जासूसी पात्र माना जाता है और अपनी तर्कशक्ति और निरीक्षण के लिए भी जाना जाता है।शेर्लाक का चरित्र हमेशा से लोगों के अन्दर उत्सुकता जगाता रहा है । यह एक काल्पनिक मशहूर जासूस है जिसकी लेखकीय संरचना की है -आर्थर कॉनन डॉयल ने। यह चरित्र अपनी आँखों से उन चीजों को देख सकता है, जो एक आम इन्सान नहीं देख पाता है ।

विदेशी जासूसी पात्र शेर्लाक होम्स के चरित्र को केन्द्र में रखकर अब भारत में भी अमेज़न प्राइम के ओटीटी प्लेटफॉर्म पर 'यंग शेरलॉक' नाम की एक वेबसिरीज़ को रिलीज किया गया है। इसमें शेरलॉक होम्स के जवानी के दिनों को दिखाया गया है। इसके आठ एपीसोड की लम्बाई पैतालीस से पचपन के मिनट के बीच की है जिसका निर्देशन गाय रिची द्वारा किया गया है।

एक साधारण लड़के के असाधारण जासूस बनने का सफर है यह वेबसिरीज़ । अगर आपको जासूसी कहानियां देखना पसन्द हैं, तब यह शो आपको निश्चित रुप में पसन्द आयेगा । प्राइम वीडियो पर इसके आठ एपीसोड दिखाए गए हैं। ऐसा नहीं है कि हर एपीसोड में आपको मजा आए कहीं-कहीं पर यह थोड़ा बोर भी फील कराएगा पर हर बार अचानक से रोमांच से भरे हुए कई सीन आ जाते हैं तब हमारा शो के प्रति लगाव और भी बढ़ जाता है।

इस वेबसिरीज़ में भी छोटी-छोटी कड़ी को जोड़कर जुर्म की तह तक जाकर उसे साबित कर देने की क्षमता देखकर यह यकीन पक्का होता है कि शेर्लाक होम्स का दिमाग एक चलता फिरता कंप्यूटर है, जिसमें हजारों किताबें बसी हुई हैं। इस कैरेक्टर को लेकर बहुत सी वेब सीरीज और फिल्में पहले भी बनाई जा चुकी है मगर यह उनसे कुछ हटकर है ।

इस वेबसिरीज़ में जासूसी के साथ-साथ आपको एक्शन भी देखने को मिलेगा ,इस सिरीज़ में यंग शेरलॉक का ऑब्जरवेशन पावर काबिले गौर है । एक आम इंसान चीजों को देखता है और फिर भूल जाता है, वहीं शेरलॉक छोटी से छोटी चीजों को

समझ कर एक कड़ी जोड़ लेता है।शेरलॉक अपनी याददाश्त को इस तरह से दिमाग में संजो कर रखता है, जैसे की कोई लाइब्रेरी हो, और वक्त पड़ने पर वह अपनी लाइब्रेरी से उस किताब को तुरन्त निकाल कर पढ़ लेता है। उसे केमिस्ट्री के साथ-साथ अपना रूप बदलने में भी गुणवत्ता हासिल है। एक बार यह सिरीज टाइमपास के लिए देखी जा सकती है जो भरपूर मनोरंजन देगी

सिरीज़ की सबसे अच्छी बात यह है कि, इसके सभी चरित्रों के साथ दर्शक इमोशनली रूप से जुड़ाव महसूस करते हैं। सिरीज के बीच-बीच में बोरियत को दूर करने के लिए जो रोमांच के सीन डाले गए हैं वह शानदार रहे। सिरीज़ की सिनेमैटोग्राफी कोरियोग्राफी जबरदस्त है सभी एक्शन सीन अच्छे से दर्शाए गए हैं। जेम्स और यंग शेरलॉक की बॉन्डिंग को भी अच्छी तरह से पेश किया गया है। सिरीज़ को पूरी तरह से अट्ठारहवीं शताब्दी में रखकर दिखाया गया है और जिस तरह से दिखाया गया है वह सच में देखकर लगता है कि यह अटृठारहवीं शताब्दी ही है।

गाय रिची के निर्देशन वाली यह सिरीज इसी मार्च में अमेज़न प्राइम वीडियो पर स्ट्रीम हो गई है। फिएन्स टिफिन, डोनल फिन, जीइन त्सेंग, मैक्स आयरन्स और कॉलिन फिर्थ इस सिरीज़ में मुख्य भूमिकाओं में हैं।यह श्रृंखला जासूसी शैली को नए सिरे से परिभाषित नहीं करती, बल्कि यह अतीत की आधुनिक राजनीतिक व्याख्याओं से संदर्भ संकेत भी लेती है।

युवा शेरलॉक आर्थर कॉनन डॉयल के जासूस की जानी-पहचानी छवि को दोहराने में कम रुचि रखता है और उस लड़के के जीवन की पड़ताल करने में अधिक रुचि रखता है जो मिथक बनने से पहले जीवित था। इसका परिणाम यह होता है कि शेरलॉक पहले के अन्य संस्करणों की तुलना में अधिक सरल और सहज है, न कि धूर्त या निंदक।

विचार

संध्या अग्रवाल
लेखक साहित्यकार हैं।

क्या दुनिया एक नए टकराव की ओर बढ़ रही है?

विश्व मध्य पूर्व में बढ़ते तनाव और वैश्विक शक्तियों की बढ़ती सक्रियता ने दुनिया को एक बार फिर चिंता के मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया है। इस पूरे परिदृश्य के केंद्र में है–हॉर्मुज़ जलडमरूमध्य (स्ट्रेट ऑफ हॉर्मुज़), जो केवल एक समुद्री रास्ता नहीं, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था और ऊर्जा आपूर्ति की जीवनरेखा है।

दुनिया के नक्शे पर भले ही यह एक संकीर्ण जलमार्ग दिखाई देता हो, लेकिन इसका प्रभाव बेहद व्यापक है। इसी रास्ते से गुजरने वाली ऊर्जा आपूर्ति कई देशों की आर्थिक स्थिरता से जुड़ी है। ऐसे में यहाँ बढ़ती हलचल केवल क्षेत्रीय तनाव का संकेत नहीं, बल्कि वैश्विक अस्थिरता की आशंका को भी जन्म देती है।

मध्य पूर्व की मौजूदा स्थिति में जिस तरह से वैश्विक शक्तियाँ सक्रिय होती दिखाई दे रही हैं, वह चिंता को और गहरा करती है। हाल के दिनों में समुद्री क्षेत्रों में बढ़ती सैन्य गतिविधियों की खबरें इस आशंका को और मजबूत करती हैं कि यह तनाव केवल कूटनीतिक दायरे तक सीमित नहीं रह गया है। कई वैश्विक शक्तियाँ इस क्षेत्र की परिस्थितियों पर लगातार नजर बनाए हुए हैं और अपनी संभावित भूमिका को लेकर विचार कर रही हैं। दूसरी ओर अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ती तल्खी इस पूरे परिदृश्य को और संवेदनशील बना रही है।

चेतावनियाँ, जवाबी बयान और सैन्य तैयारियों की खबरें एक ऐसे माहौल की ओर इशारा करती हैं, जहाँ अनिश्चितता लगातार गहराती जा रही है।

इतिहास हमें यह सिखाता है कि बड़े युद्ध अचानक नहीं होते। वे धीरे-धीरे बनते हैं–पहले अविश्वास बढ़ता है, फिर दूरी और अंततः टकराव। आज जो हालात बन रहे हैं, उनमें वही क्रम दिखाई देता है। सबसे ज्यादा चिंता की बात यह है कि दुनिया के कई देश इस तनाव के बीच अपनी-अपनी स्थिति स्पष्ट करने लगे हैं। भले ही वे सीधे युद्ध में शामिल न हों, लेकिन उनके रुख यह संकेत दे रहे हैं कि वैश्विक स्तर पर एक तरह का ध्रुवीकरण शुरू हो चुका है। यही वह स्थिति होती है, जहाँ संघर्ष सीमाओं से निकलकर व्यापक प्रभाव डालने लगता है। यह समुद्री रास्ता, जो कभी केवल व्यापार और ऊर्जा आपूर्ति का माध्यम था, अब रणनीतिक ताकत का केंद्र बनता जा रहा है। यहाँ किसी भी प्रकार की हलचल का असर केवल क्षेत्र तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। तेल और गैस की आपूर्ति प्रभावित होती है, जिससे महंगाई बढ़ती है और उसका बोझ आम आदमी तक पहुँचता है।

एक आम व्यक्ति के लिए यह सब दूर की घटनाएँ लग सकती हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि इनका असर धीरे-धीरे उसकी रोज़मर्रा की जिंदगी में दिखाई देने लगता है। रसोई का खर्च बढ़ता है, जीवन का संतुलन डगमगाता है और एक अनकही असुरक्षा मन में जगह बनाने लगती है।

आज की स्थिति में एक और बदलाव स्पष्ट दिखता है–ताकत का प्रदर्शन। पहले जहाँ कूटनीति और संवाद को प्राथमिकता दी जाती थी, अब वहाँ सैन्य तैयारियों की चर्चा अधिक दिखाई दे रही है। यह केवल रणनीति का नहीं, बल्कि वैश्विक सोच में बदलाव का संकेत है।

लेकिन सवाल यह है कि क्या ताकत के सहारे स्थायी शांति संभव है? क्या दबाव बनाकर संतुलन कायम रखा जा सकता है? या यह रास्ता अंततः और बड़े टकराव की ओर ले जाता है?

सबसे जरूरी यह है कि संवाद के रास्ते बंद न हों। क्योंकि जब बातचीत खत्म होती है, तब संघर्ष की शुरुआत होती है। और एक बार संघर्ष शुरू हो जाए, तो उसे सीमित रखना आसान नहीं होता।

आज दुनिया एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है, जहाँ उसे यह तय करना है कि वह सहयोग की राह चुनेगी या टकराव की दिशा में आगे बढ़ेगी। यह केवल देशों का निर्णय नहीं है, बल्कि उस भविष्य का चयन है, जिसमें पूरी मानवता को जीना है। यह जरूरी नहीं कि हर तनाव युद्ध में बदल जाए, लेकिन यह भी उतना ही सच है कि हर युद्ध की शुरुआत किसी न किसी तनाव से ही होती है। इसलिए यह समय सावधानी, संयम और समझदारी का है। क्योंकि अंततः, युद्ध कहीं भी हो–उसकी गूंज हर जगह सुनाई देती है।

नर्मदाष्टक स्वरूप आरती से मंत्रमुग्ध हुए नागरिक

जिले का विख्यात रामनवमी पर्व न्यायालय चौराहे पर संपन्न ,नगर भगवा मय ,शोभायात्रा का जगह-जगह स्वागत

सोहागपुर। जिले का विख्यात रामनवमी पर्व न्यायालय चौराहा पर संम्पन्न हुआ। सोहागपुर ही नहीं ब्लाक के ग्राम शोभापुर , ग्राम सेमरीहरचंद में रामनवमी पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाने के समाचार हैं। रामनवमी के पूर्व सभी वार्डों के युवाओं नगर को भगवा ध्वजों से पाट दिया था। वहीं नगर के सबसे आर्कषण का केंद्र हमेशा की तरह न्यायालय चौराहा रहा। इस क्षेत्र की सजावट महानगरों की तर्ज पर उत्कृष्टता प्रदान की गई थी।

समापन समारोह स्थल को उत्कृष्टता प्रदान करने के लिए कोर्ट चौराहा समिति के सदस्यों ने चौराहे से लेकर स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के सामने तक की गई सजावट देखने लायक रही। यहां भगवान् राम लल्ला की उत्कृष्ट प्रतिमा स्थापित की गई। जिसमें पत्नि सहित दो जजमानों से पंडित ने मंत्रोच्चारण के साथ पूजा अर्चना कराई। इधर मुख्य बाजार में शिवाजी महाराज की प्रतिमा स्थापित की गई थी। रामनवमी की शोभायात्रा प्राचीन शिव पार्वती मंदिर परिसर से निकली गई। इस प्रारंभिक शोभायात्रा में सैकड़ो नागरिक सम्मिलित हुए। शोभायात्रा शिव पार्वती मंदिर परिसर से होकर मातापुरा। बिहारी चौक , कमानिया गेट, मुख्य बाजार, पलकमती नदी पुल से होकर मुख्य समारोह स्थल पर पहुंची। न्यायालय चौराहे के

समापन समारोह कार्यक्रम का संचालन न्यायालय चौराहा समिति एवं पत्रकार संघ अध्यक्ष पवनसिंह चौहान ने किया।इसके पूर्व मुख्य बाजार में क्षेत्रीय विधायक विजयपालसिंह के नेतृत्व में शोभायात्रा पर पुष्प वर्षा की गई। इस अवसर पर भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित थे।

इस शोभायात्रा में अन्य वार्डों की शोभायात्राएं सम्मिलित हो गई। अंबेडकर वार्ड से निकली गई। शोभायात्रा के राम रथ को कांग्रेस नेता पुष्पराजसिंह पटेल एवं अंबेडकर वार्ड वासियों ने खींचा।इस अवसर पर कांग्रेस नेता एवं पदाधिकारी भी उपस्थित थे। शोभायात्रा में भगवान श्री राम, लक्ष्मण एवं सीता जी के पात्रों को रथों पर बैठाया गया था। मुख्य बाजार में शिवाजी महाराज की प्रतिमा स्थापित की गई थी। मुख बाजार में अखाड़ा प्रर्दशन किया गया जिसमें मातृशक्ति ने अपनी कला का प्रर्दशन किया। यहां जमकर आतिशबाजी जलाई गई। । वहीं डीजों एवं बैन्ड बाजों की धुन पर युवक नृत्य करते चल रहे थे। वहीं मातृशक्ति भी पीछे नहीं रही।नागरिकों एवं मातृशक्ति की भगवा पगड़ी आर्कषण का केंद्र रही। वहीं हाथों में भगवा ध्वजों लहलहाते शोभायात्रा बड़ी अद्भुत लग रही थी।जगह जगह-जगह शोभायात्रा का विभिन्न संस्थाओं ने स्वागत किया। इसके साथ जल, ठंडाई आदि से शोभायात्रा में शामिल नागरिकों एवं मातृशक्ति को तृप्त कराया। इधर जिले के विख्यात रामनवमी पर्व के समापन समारोह स्थल न्यायालय चौराहे पर भगवान् श्री राम की प्रतिमा स्थापित की गई थी। संयुक्त समिति ने उनकी पूजन अर्चना पत्नि सहित दो जजमानों से पंडित जी ने मंत्रोच्चारण की साथ कराई। न्यायालय चौराहे पर शोभायात्रा के पूर्व ही नागरिकों एवं मातृशक्ति की भारी उपस्थिति रही। यहां भगवान् श्री राम लक्ष्मण, माता सीता एवं रामसेवक हनुमानजी के पात्रों को मंच पर श्रद्धापूर्वक बैठाया गया। इस अवसर पर नर्मदाष्टक स्वरूप आरती का आयोजन किया गया था। वहीं श्री शंभू दरबार के पंडित प्रकाश मनमोहन मुद्गल , ज्ञानी सुरजीतसिंह , भूरेलाल कहार एवं यज्ञेश जोशी ने श्रीराम स्वरूपों की आरती की गई। वहीं इसी धूम में जब शंभू दरबार के पंडित प्रकाश मनमोहन मुद्गल आकस्मिक झूमने लगे।तब कई गणमान्य नागरिक भी नृत्य करने से अपने आप को रोक नहीं पाए। अंत में समाजसेवी एवं पत्रकार संघ अध्यक्ष पवनसिंह चौहान ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में नगर के गणमान्य नागरिकों के अलावा पक्ष विपक्ष के नागरिकों के अलावा जनप्रतिनिधि एवं कार्यकर्ता भारी संख्या में उपस्थित थे । उल्लेखनीय है कि न्यायालय चौराहा समिति , पूर्व छात्र सरस्वती शिशु मंदिर समिति एवं शरद पूर्णिमा समीति के तत्वावधान में न्यायालय चौराहे पर संयुक्त रूप से कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। जिसका आनंद जन-समुदाय लेता है।

ज्वारों का विर्सजन

सोहागपुर। नवरात्रि पर्व पर सोए ज्वारों का विसर्जन प्रारंभ हो गया है। आज शास्त्री वार्ड के निवासियों ने बैंड बाजों के साथ ज्वारों विसर्जन किया। ज्वारों को जुलूस के साथ मां खेड़ापति माता मंदिर में श्रद्धालु विर्सजित करते हैं।ऐसु परम्परा है। यहां से उन्हें मां नर्मदा नदी के जल में विर्सजित किया जाता है। उल्लेखनीय है कि कालान्तर में सोहागपुर के मध्य भाग में बहने वाली पलकमती नदी में विसर्जित किया जाता था। लेकिन आपने अस्तित्व के लिए लड़ती पलकमती नदी में नगरवासियों के करीबन 10गंदे नालों का पानी बहते बहते एक नाले के रूप में परिवर्तित हो गई है। कब बदलाव आएगा। इसकी राह देखते देखते नागरिकों कई पंच वर्षीय निकल गए हैं। इधर सेमरी हरचंद में ज्वारों विसर्जन प्रारंभ है। ग्राम जालौन में पंचम सिंह मेहरा ,पत्रकार तरुण मेहरा के परिवार जनों ने हर्षोल्लास के साथ ज्वारों का विसर्जन किया।इसी अवसर पर भंडारे का भी आयोजन किया गया था।

बस पलटने से बुजुर्ग की मौत, 15 यात्री घायल

सभी को अस्पताल पहुंचाया, 20 यात्री सवार थे ; चालक की लापरवाही से हादसा

आगर मालवा (नप्र)। आगर मालवा में शनिवार सुबह निजी यात्री बस अनियंत्रित होकर पलट गई। हादसा बड़ागांव के पास हुआ। हादसे में एक बुजुर्ग की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि 15 से अधिक यात्री घायल हो गए।

बस सुसनेर से नलखेड़ा होते हुए कुरावर जा रही थी। बड़ागांव के पास सड़क पर बुजुर्ग भैंस लेकर जा रहा था। बताया गया है कि बस चालक ने लापरवाही से वाहन चलाते हुए उसे टक्कर मार दी, जिससे उसकी की मौत हो गई। टक्कर के बाद बस अनियंत्रित होकर पलट गई। मृतक की पहचान गोकुल (55) सिंह पिता भगवान सिंह यादवके रूप में हुई है।

बस में कुल 20 यात्री सवार थे- हादसे के समय बस में लगभग 30 यात्री सवार थे। इनमें से15 यात्री घायल हो गए। घायलों को 108 और 112 एंबुलेंस की मदद से आगर मालवा जिला अस्पताल और मोहन बड़ोदिया सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया।

बड़ागांव चौकी प्रभारी सरदार सिंह परमार ने बताया कि बस में कुल 20 सवारी मौजूद थी जिसमें से 15 से 16 लोगों को चोट आई है सभी घायलों को इलाज के लिए नलखेड़ा अस्पताल भेजा गया है जहां से करीब चार गंभीर घायलों को रेफर कर जिला अस्पताल आगर पहुंचाया गया है।

घायलों को बस से निकालकर अस्पताल पहुंचाया

हादसे के तुरंत बाद स्थानीय लोगों ने राहत कार्य शुरू किया। उन्होंने घायलों को बस से बाहर निकाला और इलाज के लिए नलखेड़ा अस्पताल पहुंचाया। सूचना मिलने पर एडिशनल एसपी रविन्द्र कुमार बोयट और बड़ागांव चौकी प्रभारी सहित पुलिस बल मौके पर पहुंचा। पुलिस ने स्थिति को नियंत्रित किया और मामले की जांच शुरू कर दी है।

विवाद के बीच 6 वर्षीय बच्ची पर तलवार से हमला

भोपाल (नप्र)। भोपाल के शाहजहांनाबाद इलाके में 6 साल की मासूम के सिर में तलवार मारकर घायल करने के मामले में पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ धाराओं में इजाफा कर दिया है। पुलिस ने पहले केवल साधारण मारपीट की धाराओं में एफआईआर दर्ज की थी।

शुक्रवार को पुलिस ने हत्या के प्रयास की धारा में इजाफा किया है। टीआई यूपीएस चौहान ने बताया कि आरोपियों की पहचान फिलहाल नहीं की जा सकी है। फुटेज के आधार पर आरोपियों की पहचान की कोशिश की जा रही है।

6 वर्षीय मिरल अहमद पुत्री फैजान अहमद इंद्र विहार कॉलोनी एयरपोर्ट रोड की रहने वाली है। वह प्राइवेट स्कूल में किंडर गार्डन में पढ़ाई कर रही है। उसके पिता फैजान अहमद पोस्ट ऑफिस में जॉब करते हैं। फैजान के मुताबिक, उनका ससुराल शाहजहांनाबाद इलाके में स्थित नूर महल में है। बुधवार को उनकी पत्नी दोनों बच्चों के साथ मायके में मेहमानी में आई हुई थी। बुधवार की देर रात वह पत्नी और बेटा-बेटी को ससुराल से दो पहिया वहन से लेकर अपने एयरपोर्ट रोड स्थित घर के लिए रवाना हुए।

रोड पर पहले से चल रहा था विवाद- फैजान अहमद के अनुसार, ससुराल से कुछ ही दूरी पर स्थित शब्द प्रिंटिंग प्रेस के पास पहुंचे, जहां पहले से विवाद चल रहा था। करीब 70 से 80 लोग आपस में बहसबाजी कर रहे थे। उन्होंने अपने दोपहिया वाहन से यू-टर्न लेने का प्रयास किया, क्योंकि गली संकरी थी, लिहाजा मोड़ने में देरी हुई। इसी बीच विवाद कर रहे युवकों में मारपीट हो गई। हंगामे के बीच किसी ने एक जोरदार वार किया। धारदार हथियार से उनकी बेटी के सिर में चोट लगी और सिर में गहरी चोट आई।

अस्पताल की ओर से पुलिस को सूचना दी गई- फैजान अहमद ने बताया कि घबराहट में किसी तरह मैं मौके से मेन रोड की तरफ गया। पास के एक प्राइवेट हॉस्पिटल में बच्ची का उपचार कराया। अस्पताल की ओर से पुलिस को सूचना दी गई, सूचना पर पहुंची पुलिस ने मारपीट की धाराओं में एफआईआर दर्ज की। फैजान ने बताया कि हमला करने वाले किसी भी व्यक्ति को वह नहीं जानते हैं। जिसके हाथ से बेटी के सिर पर चोट आई है, सामने आने पर उसकी पहचान कर सकते हैं।

भोपाल में जुटेंगे एमपी-छत्तीसगढ़, राजस्थान के 55 यंग एमएलए

30-31 मार्च को होगा युवा विधायक सम्मेलन, राज्यसभा के उपसभापति भी होंगे शामिल

भोपाल (नप्र)। आगामी सोमवार और मंगलवार यानी 30 और 31 मार्च को भोपाल में युवा विधायक सम्मेलन होने जा रहा है। राष्ट्रकुल संसदीय संघ (सीपीए) भारत क्षेत्र के जोन-6 के तत्वावधान में मध्य प्रदेश विधानसभा में 'युवा विधायक सम्मेलन' का भव्य आयोजन किया जा रहा है। इस दो दिवसीय महाकुंभ में मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान के कुल 55 युवा विधायक एक मंच पर जुटेंगे।

तीन राज्यों के विधानसभा अध्यक्ष होंगे शामिल- 30 मार्च को कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव मुख्य रूप से उपस्थित रहेंगे। साथ ही तीन राज्यों के विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर (मध्य प्रदेश), वासुदेव देवनानी (राजस्थान) और डॉ. रमन सिंह (छत्तीसगढ़) युवा विधायकों का मार्गदर्शन करेंगे।

वाराणसी में 31 मार्च को एमपी-यूपी सहयोग सम्मेलन

सहयोग सम्मेलन से निवेश, निर्यात, ओडीओपी, शिल्प और पर्यटन को मिलेगी नई गति

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश सरकार 31 मार्च 2026 को वाराणसी में आयोजित होने वाले 'एमपी-यूपी सहयोग सम्मेलन 2026' के माध्यम से अंतरराज्यीय सहयोग को एक ठोस, परिणामोन्मुख और वैश्विक दृष्टि से जोड़ने की दिशा में निर्णायक पहल करेगी। यह सम्मेलन महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत संवाद के साथ ही ओडीओपी, जीआई टैग, पारंपरिक शिल्प, निर्यात योग्य उत्पादों, निवेश और पर्यटन को एकीकृत करते हुए एक व्यापक आर्थिक इकोसिस्टम तैयार करने की दिशा में कार्य करेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव की सक्रिय उपस्थिति इस आयोजन को नीति-निर्माण से आगे बढ़ाकर क्रियान्वयन आधारित सहयोग की दिशा में परिवर्तित करेगी, जिससे दोनों राज्यों के बीच विकास का एक सशक्त और दीर्घकालिक मॉडल विकसित होगा।

अध्ययन भ्रमण से विकसित होगा आधुनिक तीर्थ प्रबंधन का दृष्टिकोण- कार्यक्रम की शुरुआत मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में काशी विश्वनाथ कॉरिडोर के अध्ययन भ्रमण से होगी, जहां क्राउड फ्लो डिजाइन, अधोसंरचना लेआउट और तीर्थयात्री प्रबंधन प्रणालियों का गहन अवलोकन किया जाएगा। यह भ्रमण केवल एक निरीक्षण नहीं होगा, बल्कि आधुनिक शहरी नियोजन और तीर्थस्थल प्रबंधन के सफल मॉडल को समझने का अवसर प्रदान करेगा। इस अनुभव के आधार पर मध्यप्रदेश में धार्मिक स्थलों के विकास, सुविधाओं के विस्तार और व्यवस्थागत सुधार के लिए व्यवहारिक दृष्टिकोण विकसित किया जाएगा, जिससे तीर्थ पर्यटन को अधिक सुव्यवस्थित और आकर्षक बनाया जा सकेगा।

ओडीओपी, जीआई और निर्यात योग्य उत्पादों को मिलेगा एकीकृत वैश्विक मंच- सम्मेलन में ओडीओपी, जीआई टैग उत्पादों, पारंपरिक शिल्प, कृषि एवं फूड उत्पादों को ब्रांडिंग, मार्केटिंग और निर्यात से जोड़ने पर विशेष फोकस रहेगा। उत्तरप्रदेश की ओडीओपी पहल के अनुभवों और उसके आर्थिक प्रभावों की प्रस्तुति से यह स्पष्ट होगा कि किस प्रकार स्थानीय उत्पादों को वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धात्मक बनाया जा सकता है। इस मंच पर दोनों राज्यों के उत्पादों की विशिष्टताओं को रेखांकित करते हुए उन्हें एक साझा ब्रांडिंग दृष्टिकोण के तहत प्रस्तुत करने की दिशा में विचार-विमर्श होगा, जिससे निर्यात संवर्धन और मूल्य संवर्धन के नए अवसर विकसित होंगे।

एमओयू से सुदृढ़ होगी व्यापार, निवेश और कौशल विकास की साझेदारी- सम्मेलन में मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश के बीच एमओयू हस्ताक्षर किए जाएंगे, जिनके माध्यम से व्यापारिक सहयोग, औद्योगिक निवेश, कौशल विकास, हस्तशिल्प संवर्धन और पर्यटन क्षेत्र में साझेदारी को औपचारिक रूप दिया जाएगा। यह समझौता केवल दस्तावेजी प्रक्रिया तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि इसे जमीनी स्तर पर लागू करते हुए उद्योगों, उद्यमियों और शिल्पकारों के लिए नए अवसर सृजित किए जाएंगे। ओडीओपी उत्पादों के आदान-प्रदान से स्थानीय उत्पादों को नए बाजारों तक पहुंचाने और उनकी ब्रांड वैल्यू बढ़ाने की दिशा में ठोस पहल की जाएगी।

यह सम्मेलन उद्योग जगत, निवेशकों, शिल्पकारों, कृषि एवं फूड उत्पादकों और नीति-निर्माताओं को एक व्यापक और समावेशी मंच प्रदान करेगा, जहां वे नीतिगत प्रोत्साहनों, अधोसंरचना विकास, लॉजिस्टिक सपोर्ट और निवेश अवसरों पर गहन चर्चा करेंगे। वस्त्र एवं परिधान, हस्तशिल्प, एमएसएमई, खाद्य प्रसंस्करण, लॉजिस्टिक्स और पर्यटन जैसे विविध क्षेत्रों की सहभागिता इस आयोजन को बहु-आयामी बनाएगी। इससे उद्योग-सरकार समन्वय को मजबूती मिलेगी और निवेश निर्णयों को गति प्रदान करने वाला वातावरण तैयार होगा।

सम्मेलन के अंतर्गत आयोजित प्रदर्शनी में मध्यप्रदेश के ओडीओपी उत्पादों, जीआई टैग हस्तशिल्प, पारंपरिक वस्त्रों, निवेश संभावनाओं, औद्योगिक क्षमताओं और प्रमुख पर्यटन स्थलों को एकीकृत रूप में प्रस्तुत किया जाएगा। यह प्रदर्शनी केवल प्रदर्शन का माध्यम नहीं होगी, बल्कि निवेशकों और प्रतिभागियों के लिए राज्य की वास्तविक क्षमताओं को समझने और उनसे जुड़ने का अवसर प्रदान करेगी।

'धुरंधर-2' के सामने

कई फिल्मों का इतिहास बिगड़ा

रणवीर सिंह की फिल्म 'धुरंधर-2' ने बॉक्स ऑफिस पर तूफान ला दिया। फिल्म का जलवा अब भी बरकरार है। शुरुआती दिनों में फिल्म ने ऐसी बढ़त बना ली है कि अब भी हर दिन यह आराम से बड़ा आंकड़ा पार कर रही है। 'धुरंधर 2' ने बॉक्स ऑफिस पर जमकर कमाई की और साथ ही दो बड़ी फिल्मों के रिकॉर्ड को ध्वस्त कर दिया। फिल्म ने अपने पहले ही हफ्ते में भारत में 674.17 करोड़ की रिकॉर्ड तोड़ कमाई कर 'स्त्री 2' और 'जवान' का रिकॉर्ड तोड़ दिया। ईद तो 'धुरंधर-2' के नाम रही, अब देखना है कि इस साल दिवाली और क्रिसमस पर कौनसी फ़िल्में करिश्मा करेंगी!

इन दिनों 'धुरंधर-2' की धूम है। इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर कमाई का ऐसा रिकॉर्ड बना दिया, जिसके सामने कई फिल्मों की कमाई के आंकड़े बौने लगने लगे। पेड प्रीव्यू से ही 'धुरंधर 2' ने 43 करोड़ कमाए थे। इसके बाद इसकी ग्रैंड ओपनिंग 102 करोड़ रही। इसके बाद लगातार दो दिनों तक फिल्म 100 करोड़ से ऊपर का बिजनेस करती रही और इसने भारतीय सिनेमा के इतिहास का सबसे बड़ा मंडे कलेक्शन दर्ज कर सबको चौंका दिया। मंगलवार के बाद इसकी रफ्तार में थोड़ी कमी देखी गई और बुधवार को भी फिल्म की कमाई में हल्की गिरावट आई। 'धुरंधर 2' ने 1 हफ्ते में 600 करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया।

गुरुवार को राम नवमी की छुट्टी का फिल्म को जबरदस्त फायदा मिला और सुबह से ही सिनेमाघरों में भीड़ उमड़ पड़ी। सैकनिल्क के आंकड़ों के मुताबिक, फिल्म की ऑक्यूपेंसी दोपहर और शाम के शोज में 40% से भी ऊपर रही। नतीजा यह रहा कि फिल्म ने गुरुवार को अकेले 49.70 करोड़ का नेट कलेक्शन कर डाला। इसी के साथ फिल्म ने अपने पहले ही हफ्ते में भारत में 674.17 करोड़ की रिकॉर्डतोड़ कमाई कर ली।

'स्त्री 2' और 'जवान' का रिकॉर्ड टूटा- बुधवार को ही 'धुरंधर 2' ने 600 करोड़ का जादुई आंकड़ा पार कर लिया था और ऐसा करने वाली यह बॉलीवुड की पांचवीं फिल्म बन गई। इस रेस में इसने विक्की कौशल की 'छावा' (601 करोड़) को भी पीछे छोड़ दिया। गुरुवार का दिन तो इस फिल्म के लिए ऐतिहासिक रहा। सुबह के शो के साथ ही इसने 'स्त्री 2' (627 करोड़) के लाइफटाइम कलेक्शन को पछाड़ दिया और दोपहर 3 बजे तक शाहरुख खान की सबसे बड़ी बॉलीवुड 'जवान' (643 करोड़) की कुल कमाई का रिकॉर्ड भी ध्वस्त कर दिया।

दुनियाभर में 1300 करोड़ का बिजनेस- आदित्य धर के निर्देशन में बनी इस स्पाई-थ्रिलर में रणवीर सिंह के साथ-साथ आर माधवन, अर्जुन रामपाल, संजय दत्त, सारा अर्जुन और राकेश बेदी जैसे सितारों की फौज है। 19 मार्च को पर्दे पर आई इस फिल्म के पहले पार्ट ने दुनियाभर में 1300 करोड़ का बिजनेस किया। ट्रेड पंडितों का मानना है कि 'धुरंधर 2' अपने पहले पार्ट से भी कहीं आगे निकलने वाली है। चर्चा है कि फिल्म का तीसरा पार्ट भी आएगा। हालांकि, अभी तक मेकर्स ने इसे लेकर कोई ऐलान नहीं किया।

रणवीर सिंह का जलवा - फिल्म 'धुरंधर-2' के बाद रणवीर सिंह सुपरस्टार की गद्दी पर हैं। इस फिल्म से साबित कर दिया कि उनके जैसा वर्सेटाइल एक्टर ढूंढना मुश्किल जरूर है। रणवीर जो किरदार करते हैं, उसी में छा जाते हैं। हालांकि, सिनेमा में रणवीर सिंह और रणबीर कपूर की तुलना सालों से होती आ रही है। अब 'धुरंधर' के दो एक्टर्स ने एक पोस्ट को लाइक करके सोशल मीडिया पर सनसनी मचा दी।

रणवीर सिंह फिल्म 'धुरंधर 2' के जरिए

इस वक्त बॉक्स ऑफिस पर छाए हैं। हर तरफ रणवीर के नाम की चर्चा ही रही है। सोशल मीडिया पर रणवीर के क्लिप्स वायरल हो रहे हैं। इसी बीच रणवीर सिंह और रणबीर कपूर की एक तस्वीर वायरल हुई, जिसमें लिखा गया कि दोनों में से कौन बेहतर है। साथ ही

यह भी कहा गया कि रणवीर सिंह अकेले ही रणबीर कपूर को अपने किसी एक किरदार से कच्चा खा जाएंगे।

अब एक यूजर द्वारा की गई इस पोस्ट पर 'धुरंधर' के स्टार्स और रणवीर सिंह के कोस्टार्स आर माधवन और दानिश पंडोर की नजर पड़ी, तो उन्होंने भी इसमें रजामंदी दे डाली कि हां रणबीर कपूर से बेहतर रणवीर सिंह हैं। आर माधवन और दानिश पंडोर के इस पोस्ट को लाइक करने के बाद अब सोशल मीडिया पर बहस छिड़ गई कि आखिर रणबीर कपूर और रणवीर सिंह में कौन बेहतर है। हालांकि, ज्यादातर लोग यही मान रहे हैं कि रणवीर सिंह ज्यादा बेहतर एक्टर हैं। उन्होंने अपने करियर में जिस तरह की फिल्में की हैं, वो वाकई में अलग रही हैं।

दिवाली पर आएगी रामायण - ईद पर 'धुरंधर-2' धुआं उड़ा चुकी है। लेकिन, असल टेस्ट तो दिवाली और क्रिसमस पर होगा, जब साल की दो बड़ी फिल्में बॉक्स ऑफिस पर दस्तक देंगी। दिवाली की बात करें तो इस बार की दिवाली धमाकेदार रहने की उम्मीद है। दिवाली पर एक ऐसी फिल्म रिलीज होने जा रही है जिसका बजट लगभग 4000 करोड़ रुपए बताया जा रहा है। इस फिल्म का नाम है रामायण। इस फिल्म के प्रोड्यूसर नमित मल्होत्रा हैं, जबकि इसका निर्देशन नितेश तिवारी कर रहे हैं। फिल्म में रणबीर कपूर और साई पल्लवी हैं, जो राम और सीता के किरदार निभा रहे हैं। फिल्म में सनी देओल हनुमान के रोल में हैं, जबकि केजीएफ फेम एक्टर यश रावण के रोल में। फिल्म को दुनियाभर में भव्य स्तर पर रिलीज किया जाएगा। फिल्म की एक झलक हनुमान जयंती के मौके पर 2 अप्रैल को रिलीज होगी।

क्रिसमस शाहरुख़ के नाम- क्रिसमस शाहरुख खान अपने नाम करने की तैयारी में हैं। क्रिसमस 2026 पर शाहरुख खान की फिल्म 'किंग' रिलीज होगी। फिल्म का निर्देशन सिद्धार्थ आनंद कर रहे हैं और इसमें सुहाना खान भी नजर आएंगी। फिल्म एकदम एक्शन से भरपूर है और शाहरुख खान का अतरंगी अंदाज भी इसमें देखने को मिलेगा। डंकी के बाद शाहरुख खान की यह पहली फिल्म होगी। ऐसे में उनके फैन्स में फिल्म को लेकर जबरदस्त एक्साइटमेंट है। 'किंग' में अभिषेक बच्चन भी नए अंदाज में दिखाई देंगे।

रियल बॉक्स

बॉलीवुड के गानों ने हॉलीवुड में मचाया जादू

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

भारतीय सिनेमा यानी बॉलीवुड अपने रंग, भावनाओं और खासतौर पर संगीत के लिए पूरी दुनिया में मशहूर है। वहीं हॉलीवुड तकनीक, कहानी और ग्लोबल अपील के लिए जाना जाता है। लेकिन जब ये दोनों दुनिया मिलती हैं, तो कुछ ऐसा होता है जो दर्शकों के दिल में बस जाता है। यही कमाल तब देखने को मिलता है जब बॉलीवुड के गाने हॉलीवुड फिल्मों में इस्तेमाल किए जाते हैं। हाल के सालों में यह ट्रेंड और मजबूत हुआ, जहां भारतीय संगीत सिर्फ 'एक्सॉटिक एलिमेंट' नहीं बल्कि कहानी का अहम हिस्सा बनता जा रहा है। बॉलीवुड संगीत की खासियत उसकी विविधता है क्लासिकल, फोक, पॉप, सूफी और इलेक्ट्रॉनिक का अद्भुत मिश्रण। यही वजह है कि हॉलीवुड फिल्ममेकर्स भी इन गानों की ओर आकर्षित होते हैं। कई बार ये गाने सिर्फ बैकग्राउंड म्यूजिक नहीं होते, बल्कि फिल्म की शुरुआत, अंत या किसी खास सीन को यादगार बना देते हैं। उदाहरण के लिए 'छैय्या छैय्या' फिल्म 'इनसाइडर मेन' में, जान पहचान हो 'घोस्ट वर्ल्ड' में और बॉम्बे थीम 'लॉर्ड ऑफ़ वार' में। इन गानों ने यह साबित किया कि संगीत की कोई भाषा नहीं होती, वो तो सुनने वाले पर अपना जादू चलाते हैं। बॉलीवुड गानों का हॉलीवुड में इस्तेमाल सिर्फ मनोरंजन नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक आदान-प्रदान भी है। यह भारतीय संस्कृति को वैश्विक मंच देता है और विदेशों में बसे भारतीयों को भावनात्मक जुड़ाव देता है। साथ ही फिल्म की कहानी में नई परतें भी जोड़ता है। विशेषज्ञ मानते हैं कि ये गाने इमोशनल शॉर्टकट की तरह काम करते हैं। कुछ सेकंड में ही दर्शक इससे जुड़ जाते हैं। कुछ और ऐसे मौके भी हैं जब बॉलीवुड गानों ने हॉलीवुड में अपनी छाप छोड़ी। इससे साफ है कि बॉलीवुड संगीत अब सिर्फ भारत तक सीमित नहीं रहा। सवाल उठता है कि यह ट्रेंड क्यों बढ़ रहा है! तो इसका सीधा सा जवाब है ग्लोबलाइजेशन का प्रभाव। आज दुनिया पहले से ज्यादा जुड़ी हुई है। ओटीटी प्लेटफॉर्म्स और सोशल मीडिया ने कंटेंट की सीमाएं खत्म कर दी। भारत एक बड़ा फिल्म बाजार है और हॉलीवुड इसे नजरअंदाज नहीं कर सकता। साथ ही बॉलीवुड म्यूजिक का रिदम और मेलोडी पश्चिमी संगीत से अलग है, जो हॉलीवुड फिल्मों में एक नया फ्लेवर जोड़ता है।

सवाल यह है कि क्या यह सिर्फ एक ट्रेंड है या आने वाले समय में और बढ़ेगा! संकेत साफ हैं कि इंटरनेशनल कोलैबोरेशन बढ़ रहा हैं। भारतीय कलाकार ग्लोबल स्तर पर पहचान बना रहे हैं। फिल्मों में क्रॉस-कल्चरल कंटेंट की मांग बढ़ रही है। इससे लगता है कि भविष्य में और भी बॉलीवुड गाने हॉलीवुड फिल्मों में सुनाई देंगे और शायद पूरी फिल्में भी इस तरह के मिश्रण पर आधारित हों। बॉलीवुड और हॉलीवुड का यह मेल सिर्फ फिल्मों तक सीमित नहीं है, यह दो संस्कृतियों का मिलन है। जब 'छैय्या छैय्या' जैसे गाने न्यूयॉर्क की सड़कों पर गूंजते हैं या 'मेरा जूता है जापानी' मास्को की सड़कों पर सुनाई देता है, तो यह साबित होता है कि संगीत की कोई सीमा नहीं होती। आने वाले समय में यह सहयोग और गहरा होगा, और शायद वह दिन दूर नहीं जब एक ही फिल्म में दोनों इंडस्ट्री के कलाकार, संगीत और कहानियां बराबरी से नजर आएं।

आज भी जब कोई बॉलीवुड का गाना विदेश में सुनाई देता है, तो भारतीय दर्शकों के चेहरे पर अपनापन और गर्व दोनों झलकने लगते हैं। फ़िलहाल तक बॉलीवुड-हॉलीवुड बहस आमतौर पर इस बात पर रही कि हम किन स्टोरीज़ या ट्यून्स को इंस्पायर करते हैं। लेकिन, कम जाने-माने इस तथ्य को कि बॉलीवुड की ही धुनें भी कई बड़ी हॉलीवुड फिल्मों और टीवी शोज़ में जगह बना चुकी हैं। ये गाने न सिर्फ़ वहां के ऑडियंस को एक अलग कल्चरल लेयर देते हैं, बल्कि बॉलीवुड की म्यूज़िक इंडस्ट्री की ग्लोबल इमेज को भी मजबूत करते हैं। राज कपूर के युग से लेकर नवीनतम मार्वल सीरीज़ तक, बॉलीवुड संगीत कई तरह से हॉलीवुड के फिल्म स्कोर का हिस्सा बन चुका है। उदाहरण के लिए, राइन रेनॉल्ड्स की सुपरहिट फिल्म 'डेडपूल' (2016) ने राज कपूर की 'श्री 420' के अमर गीत 'मेरा जूता है

जापानी' को ओपनिंग और क्लाइमेक्स दोनों सीन में इस्तेमाल किया। इससे डरावने-हास्य-डरामा वाला यह सुपरहीरो यूनिवर्स अचानक भारतीय सिनेमा की याद दिलाने लगा। इसी फिल्म में बाद में 'कभी हमने नहीं सोचा था' जैसा रोमांटिक क्लासिक भी दिखाया गया, जिससे यह संदेश मिलता है कि हॉलीवुड फ़िल्म-निर्माता अब भारतीय गानों को सिर्फ़ एक क्विर्की टच नहीं, बल्कि इमोशनल टोन-सेटर के रूप में भी देख रहे हैं। डेज़ी वॉशिंगटन और क्लाइव ओॉन की थ्रिलर 'इनसाइड द मेन' (2006) में की फिल्म दिल से का पॉइंट ऑफ? ऑवर गाना 'छैय्यां-छैय्यां' ओपनिंग क्रेडिट्स में बजता दिखता है, जिसे निर्देशक स्पाइक ली ने खुले अमल तौर पर कल्चरल मिक्स बताया। भारी बैसों और ब्रास इंस्ट्रूमेंट्स के साथ रीमिक्स वर्ज़न यहां उस शहर की गतिविधि को दर्शाता है जिसमें लोग अलग-अलग धर्मों, भाषाओं और तानों के होते हुए भी एक साथ जीवन जी रहे हैं। इस तरह बॉलीवुड की एक देशी धुन शहर की सामाजिक जटिलता को दर्शाने वाला ऑडियो टेक्स्चर बन जाती है। ऐसा ही एक दिलचस्प उदाहरण निकोल किडमैन और ईवान मैकग्रेगर वाली 'म्यूज़िकल माऊलिन रॉग' (2001) में सुनाई देता है, जहां फिल्म चाइना गेट का गाना 'छम्मा-छम्मा बाजे में मेरी पैजनिया' निकोल किडमैन के 'डायमंड्स आर अ गर्ल्स बेस्ट फ्रेंड' नंबर के बीच में इंटरकट के रूप में आता है। इस जगह इसे सिर्फ़ एक एक्ज़ॉटिक ट्विस्ट नहीं, बल्कि विश्वव्यापी एंटरटेनमेंट के एक फ्यूज़न फॉर्म के रूप में पेश किया गया है। दरअसल, यह दिखाता है कि बॉलीवुड की डांस नंबर्स अब इंटरनेशनल फिल्मों के विज़ुअल लैंग्वेज का हिस्सा बन चुके हैं।

मोहम्मद रफी की आवाज़ वाले 'मेरा मन तेरा इस्तेमाल, जो फिल्म के हास्य और सतिर पर और भी ज़ोर डालता है। इसी तरह 'द एक्सीडेंटल हसबैंड' (2008) में साथिया का 'छलका छलका रे' शादी की जगह पर बजता हुआ दिखता है, जिससे यह लगता है मानो हॉलीवुड वेडिंग सीन में भी भारतीय बारात की यादें जग रही हैं। इन तरह के इस्तेमाल से ऑडियंस को लगता है कि उनकी फिल्म बस एक जगह की नहीं, बल्कि दुनिया की कहानी है, और भारतीय म्यूज़िक उस कहानी का एक प्रामाणिक पार्ट बन जाता है। आर रहमान की 'बॉम्बे थीम' को निकलॉस केज-फिल्म 'लार्ड ऑफ़ वार' (2005) में इस्तेमाल किया गया, जहां यह धुन अंडरवर्ल्ड और वैश्विक हथियार ट्रेड के बीच में एक दमामेदार बैकड्रॉप बनती है। यह दिखाता है कि आज भारतीय गाने सिर्फ़ रोमांटिक या डांस सीन तक ही सीमित नहीं रहे, बल्कि गहरे राजनीतिक और सामाजिक थीम वाली फिल्मों में भी स्कोरिंग टूल के रूप में इस्तेमाल हो रहे हैं।

यह ट्रेंड सिर्फ़ फिल्मों तक ही नहीं रुका है, बल्कि रीसेंट वेब-सीरीज़ में भी दिखता है। जैसे मार्वल की सुपरहिट सीरीज़ 'लौकी' के फाइनल एपिसोड में सोनाक्षी सिन्हा-स्टार फिल्म 'हैप्पी फिर भाग जाएगी' (2018) का गाना 'स्वाग सहा नहीं जाए' बैकग्राउंड में बजता दिखता है, जिस पर बाद में एंड क्रेडिट्स में ऑफिशियल रूप से भी लिखा जाता है। इससे यह इमेज बनती है कि बॉलीवुड ने अब न सिर्फ़ फिल्मों, बल्कि डिजिटल-आधुनिक स्ट्रीमिंग यूनिवर्स में भी अपनी जगह बना ली है। इन सब उदाहरणों से यह साफ़ होता है कि बॉलीवुड की म्यूज़िक इंडस्ट्री अब सिर्फ़ भारत या दिल्ली-मुंबई तक सीमित नहीं रही, बल्कि एक ग्लोबल रेफरेंस पॉइंट बन गई।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

'रामायण' का रणबीर कपूर लुक जल्द सामने

राम नवमी के अवसर पर रणबीर कपूर की 'रामायण 'के मेकर्स ने एक बड़ा सरप्राइज दिया। फिल्म के प्रोड्यूसर नमित मल्होत्रा ने आधिकारिक तौर पर घोषणा की है कि फिल्म से भगवान रामकी पहली झलक हनुमान जयंती के दिन दुनिया के सामने आएगी। नमित ने सोशल मीडिया पर लिखा कि 'रामायण हम सबकी कहानी है। उन्होंने कहा कि हम हर कदम पूरी जिम्मेदारी और भक्ति के साथ उठा रहे हैं, ताकि 'रामायण' को उसकी असल रूह और भव्यता के साथ पर्दे पर उतार सकें। रणबीर कपूर की 'रामायण' को लेकर फैंस की बेताबी अब खत्म होने वाली है. नितेश तिवारी के निर्देशन में बन रही इस फिल्म को लेकर एक बड़ा अपडेट सामने आया। फिल्म की टीम अब सीधे अमेरिका से अपने प्रमोशन का शंखनाद करने जा रही है। फिल्म के पोस्टर और पहले टीजर के बाद यह इस प्रोजेक्ट का पहला बड़ा ऑफिशियल इवेंट होगा। खबर है कि मार्च के आखिर तक रणबीर कपूर, डायरेक्टर नितेश तिवारी और प्रोड्यूसर नमित मल्होत्रा अमेरिका में मीडिया से मुखातिब होंगे। इस खास इवेंट के दौरान फिल्म से जुड़ी कुछ खास झलकियां दिखाई जा सकती हैं। इस खबर ने 'रामायण' का इंतजार कर रहे दर्शकों के बीच हलचल तेज कर दी।

अशोक जोशी

दो दिन बाद दुनियाभर में मूर्ख दिवस मनाया जाएगा। बेवकूफी का यह खेल फिल्मों में भी बहुत खेला गया है। हिन्दी में एक फिल्म आयी थी बेवकूफ जिसके निर्माता निर्देशक थे आईएस जौहर। इस फिल्म में उन्होने दावा किया था कि जो दर्शक इस फिल्म को देखकर

नहीं हंसेगा उसे 1 लाख रूपए दिए जाएंगे। वाकई फिल्म में हंसी मजाक के इतने वाकिये थे कि दर्शकों के पेट में बल पड़ जाते थे। कुछ लोगों का मानना है, कि इस फिल्म को लेकर जौहर ने दर्शकों को बेवकूफ बनाया था। क्योंकि, यह फिल्म हॉलीवुड की मजाकिया फिल्म 'इट्स मेड मेड मेड वर्ल्ड' की कॉपी थी। कुछ भी हो पर्दे पर बेवकूफ से दिखाई देने वाले आई.एस.जौहर मूर्ख या बेवकूफ तो हर्गिज नहीं थे। वह अपने जमाने के सबसे ज्यादा पढे लिखे कलाकार माने जाते थे।

मूर्ख दिवस पर विशेष

फिल्मों में बेवकूफों के बादशाह थे आईएस जौहर

मजे की बात तो यह है कि आईएस जौहर की फिल्मों के घटनाक्रम जितने मजाकिया होते थे, उनकी जिंदगी की घटनाएं भी उतनी ही ज्यादा मजेदार होती थी। आज के चर्चित फिल्मकार करण जौहर के ताऊ और यश जौहर के बडे भाई आईएस जौहर का एक जुडवां भाई भी था जिसने उनके हमशक्ल होने का भरपूर फायदा उठाया। उसने न केवल इनकी गर्लफ्रेंड के साथ शादी कर ली, बल्कि अपने किए गए अपराध के बदले आईएस जौहर को हवालाता तक पहुंचा दिया था। वह अपने आपको आधुनिक पांडव भी कहते थे। उनका कहना था कि द्वापर युग में पांच पांडवों ने एक औरत के साथ शादी की थी, लेकिन, वे आज के पांडव हैं, इसलिए पांच महिलाओं से शादी करेंगे और उन्होंने वाकई में ऐसा किया भी। यह बात और है कि बाद में उनका पांचों पत्नियों से तलाक हो गया था!

आईएस जौहर इनका जन्म 16 फरवरी 1920 को तलागंग (झेलम जिले) में हुआ था, जो बंटवारे के बाद पाकिस्तान के हिस्से में आया। पाकिस्तान में रहते हुए इन्होंने अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान में एमए किया था। इसके बाद उन्होंने एलएलबी की। उस समय पहला एक साथ इतनी डिग्री हासिल करना अपने आप में बड़ी बात थी। 1947 मे वह एक शादी के लिए भारत आए और तभी लाहौर में दंगे शुरू हो गए। लाहौर की जिस हिंदू कॉलोनी शाह आलमी बाजार में उनका घर था, उसे पूरी तरह जला दिया गया। इसके बाद उनका परिवार कभी लाहौर नहीं लौटा और दिल्ली में बस गया। आईएस जौहर नौकरी के सिलसिले में जालंधर में ही रहे, लेकिन फिर 1949 में ये मुंबई चले आए।

जौहर कलम के धनी थे। मुंबई आकर उउन्होंने फिल्म 'एक थी लड़की' की कहानी लिखी जो निर्माता रूप के शौरी को इतनी पसंद आई कि उन्होंने इस टाइटल के साथ फिल्म बनाई। बतौर लेखक यह इनकी पहली फिल्म थी। इस फिल्म में उन्होने एक हास्य भूमिका की जिसे दर्शकों ने बेहद पसंद किया और फिल्मी दुनिया में उनकी गाडी चल पड़ी। 50 के दशक में बीआर चोपड़ा की फिल्में लगातार फ्लॉप हो रही थीं। निराश चोपड़ा ने फिल्मी दुनिया छोड़कर पत्रकारिता में

जाने का फैसला कर लिया। वे आईएस जौहर लाहौर से दोस्त थे। पूरी कहानी जानने के बाद जौहर ने अपनी लिखी एक बेहतरीन स्क्रिप्ट उन्हें सौंप दी और फिल्म बनाने का हौसला दिया। बीआर चोपड़ा ने ऐसा ही किया। यह थी अशोक कुमार अभिनीत फिल्म 'अफसाना' जिसने प्रदर्शित होते ही न केवल बॉक्स आफिस पर धमाका किया, बल्कि बीआर चौपडा को भी बतौर निर्देशक स्थापित कर दिया। बीआर चोपड़ा उनका इतना एहसान मानते थे कि उन्होंने अपने छोटे भाई यश चोपड़ा को अपना असिस्टेंट डायरेक्टर बनाने के बजाय इनके पास भेज दिया।

1954 में आईएस जौहर ने फिल्म 'नास्तिक' की कहानी लिखी और इसका निर्देशन भी किया। यह फिल्म एक ऐसे शख्स की कहानी थी, जो जिंदगी के दुखों से परेशान होकर नास्तिक बन जाता है। ये कहानी उन्होंने बंटवारे के मंजर को देखकर अपने अनुभवों पर लिखी थी। 'नास्तिक' हिट हुई और इसका एक गीत 'देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान' तो घर घर में गाया जाने लगा। इस फिल्म में यश चोपड़ा उनके सहायक निर्देशक थे। आईएस जौहर हॉलीवुड जाने वाले पहले भारतीय कलाकार थे। उन्होंने 1958 की हॉलीवुड फिल्म 'हैरी ब्लैक' से हॉलीवुड में अपना सिक्का जमाया। उसके बाद यह नॉर्थ वेस्ट फ्रंटियर, लॉरेंस ऑफ अरेबिया, डेथ ऑन द नाइल जैसी हॉलीवुड फिल्मों में नजर

आए।। फिल्म 'हैरी ब्लैक' के लिए इन्हें बेस्ट ब्रिटिश एक्टर की कैटेगरी में बाफा (ब्रिटिश एकेडमी फिल्म अवॉर्ड) में नॉमिनेशन मिला। ये नॉमिनेशन हासिल करने वाले ये पहले भारतीय कलाकार थे।

अभिनय के साथ-साथ आईएस जौहर ने 12 फिल्मों का निर्देशन भी किया और करीब 4 फिल्में प्रोड्यूस कीं। इनमें बेवकूफ (1960), जौहर महमूद इन गोवा (1965), 5 राइफल्स (1974), नसबंदी (1978) शामिल हैं। उनके निर्देशन में बनीं फिल्में नास्तिक, श्रीमती जी, श्री नगद नारायण, हम सब चोर हैं जैसी सभी फिल्में ए-ग्रेड रहीं। लेकिन, इन्होंने जिन भी फिल्मों को खुद बनाया, वो हमेशा बी-ग्रेड कही गईं। 1965 में आईएस जौहर ने अपने नाम पर फिल्म 'जौहर महमूद इन गोवा' का निर्माण किया। फिल्म हिट होते ही ये इतने उत्साहित हो गए कि इन्होंने लगातार अपने ही नाम पर फिल्में बनाना शुरू कर दिया। वहीं इन्होंने 7 फिल्मों में अपना नाम जौहर ही रखा। 1971 में आई फिल्म जॉनी मेरा नाम में आईएस जौहर ने ट्रिपल रोल निभाया। दरअसल यह जोकरनुमा रोल राजकपूर की फिल्म 'मेरा नाम जोकर' के तीन हीरो धर्मेन्द्र, मनोज कुमार और राजेन्द्र कुमार का मजाक उडाने की गरज से तैयार किया था। क्योंकि, 'जॉनी मेरा नाम' के निर्माता गुलषन राय का मजाक उड़ाते हुए राजकपूर ने कहा

था कि फिल्म का वितरण अलग मामला है और फिल्म बनाना अल।

इसी को चुनौती मानकर गुलशन राय ने पहली बार फिल्म का निर्माण कर राज कपूर के तीन नायकों का मजाक उड़ाने की खातिर यह रोल तैयार किया। मजे की बात तो यह है कि इस बेहतरीन कॉमिक रोल के लिए आईएस जौहर को बेस्ट परफॉर्मेंस इन कॉमिक रोल का फिल्मफेयर अवार्ड भी मिला था।

1971 में भारत-पाकिस्तान के युद्ध में पाकिस्तान को हार मिलने के बाद 1972 में वहां के तत्कालीन प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो भारत आए। मकसद था शिमला समझौता। जुल्फिकार के साथ उनकी बेटी बेनजीर भुट्टो भी भारत आई थीं। आईएस जौहर इतने बेबाक थे कि इतने सेंसिटिव मुद्दे के बीच उन्होंने 18 साल की बेनजीर भुट्टो को अपनी फिल्म में हीरोइन बनने का ऑफर दे दिया। उनके इस ऑफर की भारत समेत बांग्लादेश, पाकिस्तान में भी खूब चर्चा हुई।

आईएस जौहर हुनर के इतने पक्के थे कि फिल्मों के अलावा असल जिंदगी में भी ये हाजिर जवाबी से लोगों की बोलती बंद कर दिया करते थे। बड़ी-बड़ी महफिलों में इन्होंने कई लोगों का ऐसा मजाक बनाया कि लोग इनके सामने झिझकने लगे। 1978 में जब मेनका गांधी ने 'सूर्या' नाम की मैगजीन लॉन्च की तो इस मैगजीन का एक हिस्सा आईएस जौहर के खाते में आया। वो इस मैगजीन में राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों पर व्यंग्य लिखते थे। फिल्मफेयर में भी इनका एक कॉलम छपता था, जिसका नाम था 'क्वेश्चन बॉक्स।' ये कॉलम बेहद लोकप्रिय था, जिसमें लोगों के राजनीति और दूसरे मुद्दों से जुड़े सवालों पर ये मजेदार अंदाज में जवाब दिया करते थे। जिसका सवाल सबसे मजेदार होता था उस व्यक्ति को 50 रुपए का इनाम मिलता था।

10 मार्च 1984 को आईएस जौहर का लंबी बीमारी से निधन हो गया। इन्होंने मौत से दो-तीन दिन पहले ही अपने बच्चों से कहा था कि वो नहीं चाहते उनके मरने पर किसी को खबर की जाए। ऐसे में जब उनका निधन हुआ तो बच्चों ने किसी को खबर नहीं दी। चंद लोग इकट्ठा हुए जो इन्हें सायन इलेक्ट्रिक श्मशान ले गए और वहां जल्द से जल्द इनका अंतिम संस्कार किया गया। आईएस जौहर ने बेटे के सामने एक और अंतिम इच्छा रखी थी। वो ये कि जब उनकी मौत की खबर अखबार में छपे तो वो अखबार उन तक पहुंचाया जाए। इतना ही नहीं वह मरने से पहले अपने लिए श्रृद्धांजलि भी लिख गए थे।

मालुम है युद्ध की हकीकत... लेकिन!

अधिकार

प्रकाश पुरोहित

सुकावड के वक्त ता बता दिया था कि **थाली-कटोरी** और चम्मच बजाने से मुकाबला हो जाएगा, लेकिन अभी तक सरकार ने खुलासा नहीं किया है कि युद्ध से जो गैस सिलेंडर की परेशानी आ रही है, उससे कैसे निपटें! प्रधानमंत्री तो यह कह कर चुप हो गए हैं कि जैसे कोविड का मुकाबला किया था, वैसे ही युद्ध का भी करना है। इसी चक्कर में कुछ लोग शाम को थाली और प्लेट लिए खड़े थे कि शायद हमारे सुनने में गफलत हो गई हो गई होगी, लेकिन जब देखा कि आसपास कोई भी नहीं बजा रहा है तो उन्होंने भी थाली में खाना लिया और डिनर कर लिया!

हर बीमारी का एक जैसा इलाज तो हो नहीं सकता ना और हर कहीं लागू भी नहीं होता है। जैसे थाली बजाने से कोविड भाग गया, यह सिर्फ भारत में ही संभव हो सका, क्योंकि हम आज भी बजने वाली थाली और प्लेट ही वापरते हैं। चीनी और शीशे की, एक तो ढंग से बजती नहीं और दूसरे फूटने का भी डर कि खाना हाथ में रख कर भीखमंगों की तरह खाना पड़ता। 'गो-कोरोना-गो' की तर्ज पर 'गो-वार-गो' का जाप भी किया जा सकता है। रामदास आठवले का इंतजार नहीं करें। बाकी दुनिया पर जितना असर कोविड का रहा, हमारे यहां इसलिए नजर नहीं आया। वह तो गंगा में बहाई लाशें यदि फूल कर बाहर नहीं आतीं तो उतना भी नहीं होता।

गलती प्रिय दोस्त ट्रंप और नेतन्याहू की है कि पहले से बताया नहीं और युद्ध छेड़ दिया। अगर 'जिगरी दोस्त' से पूछते तो यही सलाह देते कि अभी बंगाल, तमिलनाडु सहित पांच चुनाव हैं, इन्हें निपट जाने दो, फिर कर लेना युद्ध, वैसे भी तुम्हारे पास सिवाय नोबेल हासिल करने के तो कोई और काम नहीं है, लेकिन हमारे माथे तो ये चुनाव पड़े हैं, जो हम एक बार भी जीत नहीं सके हैं। सरकार दो मोर्चों पर लद रही है कि चुनाव भी लड़ना है और लोगों को यह बताना भी है कि युद्ध से कैसे निपटना है कोविड की तरह।

जब से मोदी पीएम बने हैं, भारत के लोगों ने मुश्किलों के बारे में सोचना ही छोड़ दिया है। खुद कुछ नहीं करेंगे और उम्मीद यही करेंगे कि गज को मगर के मुंह से निकालने जैसे अवतारी अवतरित हुए थे, वैसे ही हर मुश्किल में मोदी ही सुझाएंगे। अब इशारा कर दिया है कि जैसे कोविड से पार पाया था, वैसे ही युद्ध से लड़ना है। समझदार को इशारा काफी होता है, लेकिन यहां तो वोट देने तक ही समझदारी नजर आती है, उसके बाद तो हाथ पर (या माथे) हाथ धर कर बैठ जाएंगे कि मोदी हैं ना! दरअसल, इस सरकार ने जनता की आदत ही बिगाड़ दी है, आगे-आगे विकास कर! फिर यह बात भी तो है कि जब विश्व-गुरु होने जा रहे हैं तो काहिल जनता को क्या पड़ी है कि इधर की सूई उधर भी रखे। जैसे हर घर रोजगार नहीं दे सकती सरकार तो महिलाओं के खाते में हर माह कुछ रकम डाल दी जाती है कि जहां शराबी पति भी कोटा पूरा कर सके और घर में शांति बनी रहे। पति-पत्नी में माह की शुरुआत में घनघोर प्रेम पनपता है तो श्रेय इस सरकार की मासिक किस्त को ही मिलना चाहिए या नहीं!

अब गैस सिलेंडर नहीं मिल रहा है (साठ रुपए महंगा कर दिए जाने के बावजूद) तो यह सरकार की जिम्मेदारी थोड़े ही है। जैसे कोविड के समय ऑक्सीजन सिलेंडर का रोना रोते रहते थे, अब गैस के लिए सरकार का मुंह देख रहे हैं, जबकि सरकार ने साफ बता दिया है कि कहीं कोई कमी नहीं है, फिर भी लोग चाहते हैं कि घर में दो-चार सिलेंडर तो एक्स्ट्रा पड़े ही रहने चाहिए। ऐसे में सरकार और क्या कर सकती है, क्या सिलेंडर और महंगा कर दे? साठ रुपए बढ़ा देने से भी लोगों ने खाना कम नहीं किया है तो सरकार का क्या दोष! सरकार ने हिंट कर दिया है कि पेट्रोल-डीजल या गैस या बाकी चीजों की कमी अगर परेशान कर रही है तो मान लीजिए कि कोविड फिर से आ गया है! तब बाहर निकलते थे क्या? तब छप्पन (दुकान जाते थे?) पकवान बनते थे क्या? तब होटल-रेस्तरां जाते थे क्या? घर बैठ कर 'मन की बात' सुनते थे या नहीं। वैसे भी हमारे पीएम रोज ही कुछ ना कुछ बोलते ही रहते हैं, ध्यान से सुने तो वैसे दुनिया से वैराग्य होने लगे। युद्ध में भी रोज की तरह हर चीज की तमन्ना तो राष्ट्रीय अपराध की तरह है। युद्ध को कोविड मान लेंगे तो सुखी रहेंगे और संभव है, जिंदा भी रहें!

अच्छी बात यह है कि कोरोना की उत्पत्ति की वजह अभी तक पता नहीं चली है, काम चलाने के लिए चीन का नाम लिया जा रहा है, लेकिन चीन ने भी तो अपने नागरिक खोए हैं, वहां भी लॉकडाउन लगा था। अब युद्ध के बारे में कोई बहस नहीं है कि नेता कुछ भी कहते रहें, असल वजह सभी को पता है- एपस्टिन-पेपर्स! युद्ध ही इसका असर कम कर सकता था कि तेल-गैस के भाव में उलझा दिया गया आम आदमी। किसे याद है आज एपस्टिन?

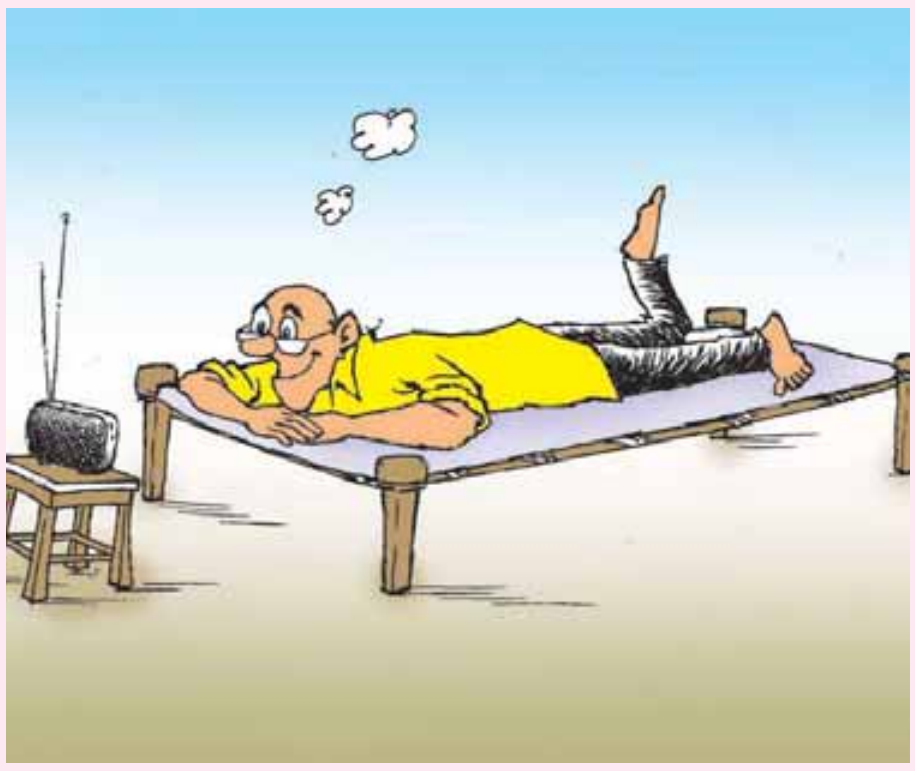

...और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

29 मार्च का दिन इतना खास क्यों हैं?

मैं यूं ही सालाना कैलेंडर पलट रही थी तो अचानक मार्च महीने की 29 तारीख पर मेरी निगाह ठहर गई। तौबा इतनी महत्वपूर्ण बातें इस दिन हुई जो हमें भी जाननी चाहिए। देश के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में 29 मार्च की बहुत अहमियत है। 1857 में 29 मार्च को मंगल पांडे ने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ विद्रोह की पहली चिंगारी सुलगाई थी, जो देखते ही देखते पूरे देश में आजादी की ज्वाला में बदल गई। अंग्रेजों ने इस क्रांति को दबाने के लिए अपनी पूरी ताकत झोंक दी। वे इस क्रांति को दबाने में कामयाब तो रहे लेकिन देशवासियों को एक सपना मिल गया। स्वराज का सपना। इस क्रांति की शुरुआत 29 मार्च को बंगाल की बैरकपुर छावनी में 34 वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री के मंगल पांडे ने परेड ग्राउंड में दो अंग्रेज अफसरों पर हमला किया और फिर खुद को गोली मारकर घायल कर लिया। उन्हें 7 अप्रैल, 1857 को अंग्रेजी हुकूमत ने फांसी दे दी। स्थानीय जल्लादों ने मंगल पांडेय को फांसी देने से मना कर दिया था, जिसकी वजह से कोलकाता से चार जल्लादों को बुलाकर देश के इस जांबाज सिपाही को फांसी दी गई ।

दो साल बाद 29 मार्च 1859 को अंतिम मुगल शासक बहादुर शाह जफर द्वितीय को 1857 की क्रांति में भागीदारी का दोषी पाया गया और अंग्रेज सरकार ने उन्हें देश निकाला देकर रंगून भेज दिया।

29 मार्च 1913 को हिन्दी के प्रसिद्ध कवि तथा गांधीवादी विचारक भवानी प्रसाद मिश्र का जन्म हुआ था। इसी दिन 1929 में हिन्दी तथा बांग्ला फ़िल्मों के प्रसिद्ध अभिनेता और निर्माता उत्पल दत्त का जन्म हुआ।

29 मार्च 1953 को ही हिलैरी तथा तेनजिंग नोर्गे द्वारा विश्व की सर्वोच्च चोटी माउंट एवरेस्ट पर विजय की गई। इसी दिन 1954 में राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय (नेशनल गैलरी आफ मॉडर्न आर्ट) का दिल्ली में शुभारंभ। 1982 में तेलुगु देशम पार्टी (भारत क्षेत्रीय राजनीतिक पार्टी) एन.टी. रामाराव द्वारा स्थापित की गई। 2001 में संयुक्त राज्य अमेरिका का ग्लोबल वार्मिंग पर क्योटो संधि को मानने से इंकार। 2003 में तुर्की एयरलाइंस विमान के अपहर्त्ताओं ने आत्मसमर्पण किया।

29 मार्च को राष्ट्रीय वियतनाम युद्ध वयोवृद्ध दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह वियतनाम युद्ध के दौरान सेवा देने वाले 90 लाख अमेरिकियों, वॉशिंगटन डी.सी. में वियतनाम वयोवृद्ध स्मारक पर अंकित 58,000 नामों और उन लोगों को विशेष श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर प्रदान करता है जिन्हें वह सम्मान नहीं मिला जिनके वे हक़दार थे। 29 मार्च को जन्मे लोगों के लिये कहा जाता है कि ऐसे लोग प्रतिभावान, सच्चे, किसी उद्देश्य के प्रति समर्पित, विश्वासी, वे गर्व से अपने विश्वास और उन लोगों के लिए लड़ेंगे जिन पर वे भरोसा करते हैं। दूसरों को कुछ ऐसा देंगे जिनकी वे कामना कर सके और हर किसी की प्रतिभा को सामने आने और प्रदर्शित होने के लिये प्रेरित करेंगे।

यूँ तो हर दिन, हर व्यक्ति खास है पर इस बार 29 मार्च को जन्मे लोगों से खास तौर से पूछिये और क्या कह रही है ज़िंदगी?

प्रकृति का उत्सव

हमारे लिए अपनों का मिलना ही उत्सव है। त्यौहार पर पूरे परिवार का साथ मिलना ही पर्व है। प्रकृति भी ऐसे ही उत्सव मनाती है।सुवासरा घसोई मार्ग पर यह दृश्य दिखाई देता है। एक कुएं के किनारे लगा यह पलाश का पेड़ कई वर्षों गिरा हुआ है लेकिन जब भी फागुन माह आता है यह सूखा पेड़ फूलों से लद जाता है। प्रकृति कितनी सकारात्मक है इससे प्रेरणा ली जानी चाहिए।

फोटो- बंशीलाल परमार

इस 'चारे' को खाने का मन करता है!

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

'ना म है बांड, जेम्स बांड'... **यह लाइन लगभग** हर कलाकार ने आईने के सामने बोली ही होगी। कयास लगाया जाता है कि डेनियल क्रैग के बाद अगला बांड कौन होगा, ऐसे में रिज अहमद की नई सीरीज **'बैट'** (उर्फ शिकार के लिए डाला जाने वाला चारा) सही समय आई है, पर इस सीरीज को रिज ने न सिर्फ लिखा, बल्कि खास किरदार शाहजहां लतीफ भी रिज ने ही निभाया है।

ब्रिटिश पाकिस्तानी मूल के रिज अहमद की पहली फिल्म **'रोड टू गुआंतानामो'** (2006) बर्लिन फिल्म फेस्टिवल में थी। वहां से लौटते समय रिज और तीन कलाकारों को ल्यूटन एयरपोर्ट पर ही रोक लिया था। पुलिस को इन पर टेररिस्ट होने का शक था। उसके बाद जब मीरा नायर की फिल्म **'रिलक्टंट फंडामेंटलिस्ट'** आई तो साउथ एशिया में रिज नाम बन गए। बीस बरस में रिज ने वो हासिल किया है, जो ख्वाबों की तामीर लगता है।

'बैट' में रिज उर्फ शाहजहां लतीफ को काम की तलाश है। ऑडिशन तो देता है, लेकिन बस कोई भी प्रोजेक्ट शुरू नहीं हो रहा है। अफवाह शुरू हो जाती है कि शाह लतीफ (रिज अहमद) अगले जेम्स बांड होंगे। उसके बाद जो सिलसिला शुरू होता है, उसे डार्क और फार्स कॉमेडी का बेहतरीन मेलजोल कहा जा सकता है। यह सीरीज अफवाह पर इंटरनेट के जहरीले रिएक्शन को दिखाती है, मजेदार, अजीब और उकसाने वाली है। इसमें नए युवा ब्रिटिश-एशियन कलाकारों की कतार है। मां के किरदार में शीबा चड्ढा हैं और सोनी राजदान मौसी बनी हैं। गज खान दोस्त और कजिन के किरदार में हैं। असल में यह अहमद का खुद को रेस से बाहर रखने का मामला है। बांड प्रोड्यूसर नहीं चाहेंगे कि अगली '007' देखते समय अहमद के किरदार को 'पागल, वहम में डूबा बेवकूफ, जो कटे सूअर के सिर के साथ डायलॉग बोलता है' अपने दिमाग में रखें। चाहे अहमद डिनर जैकेट में कितना भी अच्छा क्यों न दिखें, यह सीरीज बांड के फाइट जैसे सेट-पीस के मजेदार सीन को असली फैमिली ड्रामा में दिखाकर शक को दूर करती है। शाह की मां, ताहिरा के रोल में शीबा चड्ढा हर सीन को बेहतर बना देती हैं। छह एपिसोड की सीरीज तब सबसे बेहतर है, जब रिज अहमद बेहतरीन काम कर रहा हो, और सबसे छोटी, खुद में डूबी और खुद में खोई सोच दिखा रहा हो। किसी को यह याद दिलाने की जरूरत नहीं है कि यह आदमी एक्टिंग कर सकता है और अगर चाहे तो आंखें बंद करके बांड का रोल उलटा कर सकता है। उसके पास करने के लिए बेहतर चीजें हैं। जैसे यह लेखनी का ही कमाल है कि सीरीज में सूअर का सिर आता है, जिसे हेट कैंपेन के तहत उसके माता-पिता के घर पहुंचाया जाता है। पैट्रिक स्टीवर्ट को सूअर के रोल में कास्ट करने का शानदार आइडिया इस सीरीज की खासियत है। शाह के दिमाग में स्टीवर्ट की आवाज गूंजती रहती है, जैसे कोई जोरदार, गंदी जबान वाला भूत डांट रहा हो कि 'सोचो, बेवकूफ, सोचो!' रिज अहमद और सूअर के सिर के साथ बातें बहुत ही शानदार हैं। सीरीज अमेजन प्राइम पर एक ही बैठक में निपटाने लायक है।

रिज अहमद की नई सीरीज 'बैट'